जुलाई -८१

जुलाई ८१

(५)

मंत्र तंत्र यंत्र

विज्ञान

मूल्य ५.००

विषय–सूची

नोट :— पृष्ठ २४ से आगे का भाग पृष्ठ ४० पर पृष्ठ ३६ से आगे का शेष भाग पृष्ठ ४० पर पृष्ठ ३८ से आगे का शेष भाग पृष्ठ ४० पर पढ़िये।

❋

वर्ष : १

अंक : ७

जुलाई : १९८१

मूल्य : ५-०० रुपये

संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

संपादक

कैलाशचन्द्र श्रीमाली

सहसम्पादक

आनन्द प्रकाश

मुखपृष्ठ

पंचांगुली देवी

कार्यालय पता

"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र" विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग,

हाई कोर्ट कालोनी

जोधपुर—३४२ ००१ (राजस्थान)

टेलीफोन : २२२०६

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, ऊर्ध्वमुखी प्रगति और

भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

उद्वत गुह्यं तमो
वि यात विश्वमत्रिणम्
ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि

ऋग्वेद १-८६-१०

हे गुरुदेव! मन के गुह्य अंधकार को विलीन करो। अपने में सभी को विलय करते अंधकार को यहां से दूर भगा दो, और आपके द्वारा हमें आत्म ज्योति प्राप्त हो।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं पर अधिकार पत्रिका का है, अतः अन्यत्र अनुमति लेकर ही प्रकाशित करें। पत्रिका का वार्षिक विशेषांक का मूल्य ही १०५.०० रु. है, अतः अन्य सभी अंक जब तक प्रकाशित हों, निःशुल्क ही समझें। पत्रिका का दो वर्ष का शुल्क १०५.०० रु. तथा एक वर्ष का शुल्क ६०.०० रु. है। एक अंक का मूल्य ५.०० रु. है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होगी, साथ ही साधक ऐसी कोई उपासना, मन्त्र जप प्रयोग या साधना न करे, जो नैतिक, सामाजिक नियमों के विरुद्ध तथा कानूनी मान्यता के विपरीत हो। पत्रिका में विज्ञापित सामग्री के सम्बन्ध में आलोचना या आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

मुद्रक : साधना प्रेस हाईकोर्ट रोड, जोधपुर (राज.) फोन : २४९४१

सुना है कि—

गुरु पूर्णिमा— इस वर्ष गुरु पूर्णिमा महोत्सव १७ जुलाई को जोधपुर में ही मनाया जाएगा जिसमें दो शिष्यों का "प्रज्ञाभिषेक" भी किया जायेगा।

❋ इस वर्ष अमरनाथ की यात्रा विशेष महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसी दिन एक विशेष योग बना है जो कि ज्योतिष की दृष्टि से श्रेष्ठतम है और पिछले सौ वर्षों में इस प्रकार का पहली बार योग बना है। श्रावण पूर्णिमा को भगवान अमरनाथ के दर्शन करना इस दृष्टि से उत्तम है।

❋ इस वर्ष त्रिजटा अघोरी अमरनाथ यात्रा पर जायेंगे और वे वहां विशेष प्रयोग कर भगवान अमरनाथ को प्रसन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त स्वामी अद्भुतानन्द, स्वामी हरिहरानन्द, जैसे विश्व विश्रुत योगी भी भाग लेंगे। प्रामाणिक रूप से यह भी सुनने में आया है कि इस वर्ष योगीराज स्वामी सच्चिदानन्दजी भी श्रावण पूर्णिमा को अमरनाथ पर होंगे।

❋ इस वर्ष १७-७-१९८१ को चन्द्र ग्रहण तथा ३१-७-१९८१ को सूर्य ग्रहण पड़ेगा। ये दोनों ग्रहण-काल तांत्रिक साधकों के लिये वरदान स्वरूप हैं, इन कालों में कई तांत्रिक विशेष प्रयोग करेंगे।

❋ स्वर्ण बनाने की विधि अभी तक लोप नहीं हुई है। पिछले दिनों एक साधु ने रासायनिक क्रिया से पारे से सोना बनाया, यह प्रयोग अत्यन्त सरल है, और यह सोना अपने आप में पूरी तरह से खरा और प्रामाणिक उतरा है।

❋ पिछले दिनों पत्रिका कार्यालय में एक तांत्रिक मुसलमान फिदुर खां आये थे और उन्होंने मृतात्माओं से बात करने की विशेष क्रिया सम्पन्न की थी। उन्होंने पश्चिम के प्रसिद्ध दिवंगत कीरो या चीरो की आत्मा को बुलाकर भविष्य से संबंधित कई प्रश्न पूछे थे और जो उत्तर प्राप्त हुए वे [illegible] तथा विश्वसनीय थे।

❋ मार्च में डा. श्रीमाली के शिष्य अरविन्द कुमार ने बम्बई में एक बहुत बड़ा यज्ञ सम्पन्न कराया जिसमें मन्त्रों के माध्यम से अग्नि प्रज्वलित करके यह सिद्ध कर दिया, कि मन्त्रों के माध्यम से कुछ भी कार्य सम्पन्न किया जा सकता है।

❋ नैनीताल के पास पटवा डांगर एक स्थान है। वहां से दो तीन किलोमीटर दूर एक विशेष पौधा 'अर्कानी' प्राप्त हुआ है। अभी तक यह पौधा अप्राप्य था पर इसका वर्णन आयुर्वेद के कई ग्रन्थों में पढ़ने को मिलता है। इसके माध्यम से किसी भी प्रकार के कैंसर का इलाज सम्भव है और मात्र एक सप्ताह में कैंसर जड़-मूल से नष्ट हो जाता है।

☼

वर्ष : १
अंक : ७
जुलाई : १९८२
मूल्य : ५-०० रुपये

संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

❋

सम्पादक
कैलाशचन्द्र श्रीमाली

❋

सहसम्पादक
आनन्द प्रकाश

मुखपृष्ठ
पंचांगुली देवी

कार्यालय पता
"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र" विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग,
हाई कोर्ट कालोनी
जोधपुर—३४२ ००१ (राजस्थान)
टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, ऊर्ध्वमुखी प्रगति और
भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

❋❋

प्रार्थना

गूहत गुह्यं तमो
वि यात विश्वमत्रिणम्
ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि

ऋग्वेद १-८६-१०

हे गुरुदेव! मन के गुह्य अंधकार को विलीन करो। अपने में सभी को विलय करते अंधकार को यहां से दूर भगा दो, और आपके द्वारा हमें आत्म ज्योति प्राप्त हो।

❋❋

❋ पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं पर अधिकार पत्रिका का है, अतः अन्यत्र अनुमति लेकर ही प्रकाशित करें। ❋ पत्रिका का वार्षिक विशेषांक का मूल्य ही १०५.०० रु. है, अतः अन्य सभी अंक जब तक प्रकाशित हों, निःशुल्क ही समझें। पत्रिका का दो वर्ष का शुल्क १०५.०० रु. तथा एक वर्ष का शुल्क ६०.०० रु. है। एक अंक का मूल्य ५.०० रु. है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होगी, साथ ही साधक ऐसी कोई उपासना, मन्त्र जप प्रयोग या साधना न करे, जो नैतिक, सामाजिक नियमों के विरुद्ध तथा कानूनी मान्यता के विपरीत हो। पत्रिका में विज्ञापित सामग्री के सम्बन्ध में आलोचना या आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

❋

मुद्रक : साधना प्रेस, हाईकोर्ट रोड, जोधपुर (राज.) ☎ : २४६४१

मृत्युंजयी योगी

स्वामी नवरात्रानन्द सरस्वती

गुरु पूर्णिमा का दिन,

मुझे आज भी वह घटना ज्यों की त्यों याद आ रही है, ऐसा लग रहा है, जैसे कल की ही यह घटना हो''' एक एक दृश्य आंखों के सामने कौंध रहा है, और मेरा सारा शरीर पुलकित रोमांचित हो उठता है।

वाराणसी का प्रसिद्ध दशाश्वमेध घाट। जगह जगह चिताएं जल रही है, चड़ड़ चड़ड़ की आवाजों के साथ मृत मानवों के चर्म, मांस मज्जा जलकर वातावरण को एक अजीब गंध से भर देते हैं' घाट के किनारे ही डोम का घर'' और उसके पास ही छोटी सी बगीची''''जहां से पूरा श्मशान घाट और जलती हुई चिताएं साफ साफ दिखाई दे रही हैं।

पिछले दो महिनों से मैं हिडिम्बा साधना कर रहा था. मेरे साथ थे योगी निखिलेश्वरानन्द'''फक्कड़'''मस्त''' निर्द्वन्द्व निस्पृह'' कोई माया मोह ममता नहीं''''न काया की चिन्ता, और न माया की परवाह''' अद्भुत व्यक्तित्व से सम्पन्न'' पैरों में खड़ाऊ. कटि पर धोती, शरीर का ऊपरी भाग अनावृत,'' कोई वस्त्र नहीं, लम्बी जटाएं'''' देदीप्यमान चेहरा'' दिप् दिप् करती हुई ज्वलित आंखे''''कुल मिलाकर पूरा व्यक्तित्व एक अपूर्व चुम्बकीय शक्ति से आवृत्त.... जो एक बार देखता '''उसे बात करने की इच्छा अवश्य होती'''कई साधु योगी'''तांत्रिक शिष्य बनने को आतुर''''पर यह फक्कड़ व्यक्तित्व किसी से बंधने को तैयार नहीं था न शिष्यों से घिरना चाहता था''''न लोगों से मिलना। अकेला''' एकान्त प्रिय'''साधना में लीन'''तल्लीन'''कठोर से कठोर साधना करने में तैयार''' पिछले कुछ महीनों से अघोर साधना में रत था'''श्मशान साधना,''''चिता साधना'' शव साधना''''अघोरियों के बीच साधना में रत''' कोई हिचकिचाहट नहीं'''मैं दो महिनों से साथ था''''पर उदासीन, निस्पृह निर्मोह''''कभी सम्भव हुआ तो दो चार मिनट बोल लिया कभी वह भी नहीं'''मैं जितना ही ज्यादा इस व्यक्तित्व को समझनेकी कोशिश करता, उतना ही उलझता जाता।

दशाश्वमेध घाट पर आये छः दिन हो गये थे''''आज सातवां दिन था''''सारी रात श्मशान में साधना रत'''' यहीं पर अघोरी पाशुपतनाथ से भेंट होनी थी'' ऐसी संभावना थी''''ऐसा ही आभास हुआ था।

इन दिनों स्वामी निखिलेश्वरानंद कृत्या साधना में रत थे''''कठिन'''कठोर साधना'''जरा भी चूक हुई तो प्राण समाप्त''''''भगवान शंकर की कृत्या को रिझाना'''अनुकूल करना क्या कोई मामूली साधना हो सकती है ?

तभी उस शाम के धुंधलके में श्मशान घाट की तरफ से एक अघोरी आता हुआ दिखाई दिया''''पास आने पर ही उसे साफ साफ देखा जाना सम्भव हो सका''''''मैला'''गंदा''''''लम्बी उलझी हुई जटाएं''''''''चेहरा गंदला सा धंसी हुई पीली आंखे''''''हाथ में एक खप्पर'''लम्बे लम्बे मैले गंदगी से भरे नाखून''''''और सारा शरीर बदबू से आवृत्त..देख कर घिन आ रही थी, हवा के साथ साथ बदबू का झोंका सारे सिर को झनझना देता'' ऐसी बदबू तो जलते हुए मुरदे से भी नही आ रही थी''''''गंदगी का साक्षात जीवन्त रूप।

वह आकर बैठ गया''''हाथ में खप्पर'''खप्पर में कुछ खाद्य पदार्थ था'''''''' हाथों से पीब सी निकल रही थी, और वह उन्हीं हाथों से वह खाद्य पदार्थ लेकर मुंह में डालता''''''''उफ् !

बोला''''स्वामी ! ले भूख लगी हो तो आ खा ले''''संकेत निखिलेश्वरानन्द की तरफ था''''मैं तो मरने पर भी उन पीब भरे हाथों से कुछ भी खाद्य खाने को तैयार नहीं हो पाता''''''मुझे कहता तो मैं खप्पर ही उसके सिर पर दे मारता।

निखिलेश्वरानन्द ने उसकी तरफ देखा""""गंदगी का भभका सा उठा"""""और मधुनों के माध्यम से चढ़ कर पूरे सिर को झनझना दिया"""""मैंने सोचा अब इस अघोरी की मौत आई है"""""निखिलेश्वरानन्द का गुस्सा तो प्रसिद्ध है, और यह उसे ही खाने को आमंत्रित कर रहा है।

पर आश्चर्य""""निखिलेश्वरानन्द उठा""""उस अघोरी से सट कर बैठ गया""""अघोरी ने उन पीव भरे हाथों से लड्डू का छोटा सा टुकड़ा खप्पर में से निकाला""""और आगे बढ़ाया निखिलेश्वरानन्द ने लड्डू को उसके हाथों से ही मुंह में ले लिया""""उफ्""""गंदा""""घृणित""""दुर्गन्ध पूर्ण""""।

पर यह क्या""""सामने वह पीव भरा अघोरी अदृश्य था"""" और खड़े थे साक्षात शंकर""""भगवान सदाशिव""""बाबा विश्वनाथ""""और निखिलेश्वरानन्द उनके चरणों के पास बैठे थे, उन के सिर पर था काशी के बाबा विश्वनाथ का ममत्वपूर्ण वरद हस्त""""।

पर दूसरे ही क्षण बाबा विश्वनाथ अदृश्य थे""""और निखिलेश्वरानन्द की समाधि लगी हुई थी।

और आज मैं नारायणदत्त श्रीमाली को देख रहा हूँ""""कहाँ वह सन्यास जीवन का निखिलेश्वरानन्द रूप, और कहाँ यह गृहस्थ का नारायण दत्त श्रीमाली रूप"""" पर कुछ भी तो नहीं बदला है""""वही मुस्कराहट वही स्नेह""""वही अपनत्व....

और आज जब मैंने उनको जीवन में घटित घटना को याद दिलाई तो एक रहस्यमयी मुस्कुराहट बिखेर कर ऐसे हो गये """जैसे कुछ याद ही न हो।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष भगवान शिव को सर्वाधिक प्रिय है; इसमें १ से २१ मुखी रुद्राक्ष होते है, इनके महत्व के बारे में प्रत्येक भारतीय एवं साधक परिचित हैं। बाजार में नकली रुद्राक्षों की भरमार है"""" इसकी पहिचान सामान्य मानव नहीं कर पाता, विशेष दक्ष व्यक्ति ही असली-नकली रुद्राक्ष की पहिचान कर सकता है।

पत्रिका-कार्यालय इस बात के लिए प्रयत्नशील है, कि यहां से जो भी सामग्री भेजी जाय, वह प्रामाणिक, शुद्ध एवं मन्त्र सिद्ध चैतन्य हो।

पत्रिका कार्यालय में सभी प्रकार के रुद्राक्ष उपलब्ध है, जो सूक्ष्मता से जांचे परखे गये हैं—

एक मुखी रुद्राक्ष	२४००/-	बारह ,, ,,	७००/-
दो मुखी रुद्राक्ष	१२०/-	तेरह ,, ,,	५००/-
तीन ,, ,,	४००/-	चौदह ,, ,,	५००/-
चार ,, ,,	३००/-	पन्द्रह ,, ,,	१७००/-
पांच ,, ,,	३०/-	सोलह ,, ,,	१६००/-
छः ,, ,,	२००/-	सत्रह ,, ,,	११००/-
सात ,, ,,	४००/-	अठारह ,, ,,	१५००/-
आठ ,, ,,	४००/-	उन्नीस ,, ,,	८५०/-
नौ ,, ,,	५००/-	बीस ,, ,,	१३००/-
दस ,, ,,	४५०/-	इक्कीस ,, ,,	१५००/-
ग्यारह ,, ,,	३००/-		

अग्रिम आधी धनराशि भेजकर प्राप्त करें।

ग्रहण काल में सिद्ध करने योग्य सामग्री

निकट भविष्य में दो सूर्यग्रहण और दो चन्द्रग्रहण पड़ने वाले हैं। ग्रहण-काल साधकों के लिए विशेष महत्व का है। इस काल में विशेष उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए कुछ विशेष दुर्लभ वस्तुओं को सिद्ध किया जाता है। तांत्रिक-मांत्रिक साधनाओं से संबंधित कुछ विशिष्ट मंत्रों को सिद्ध करने के लिए भी ग्रहण-काल महत्वपूर्ण है।

इस लेख में उपरोक्त बातों की जानकारी विस्तार से दी गई है।

साधकों के लिये ग्रहण काल विशेष महत्वपूर्ण होता है क्योंकि ग्रहण काल में यदि साधना की जाय तो निश्चित सफलता प्राप्त होती है। यही नहीं, अपितु कुछ दुर्लभ वस्तुएं भी इस ग्रहण काल में सिद्ध की जाती हैं जिससे मनोवांछित सफलता प्राप्त हो जाती है।

इस वर्ष कुल चार ग्रहण भूगोल पर दिखाई देंगे।

१- खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण (१७-७-१९८१)
२- खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण (३१-७-१९८१)
३- खग्रास चन्द्र ग्रहण (१०-१-१९८२)
४- खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण (२५-१-१९८२)

यह सही है कि इन ग्रहणों में से केवल ३१-७-८१ वाला सूर्य ग्रहण तथा १० जनवरी ८२ वाला चन्द्र ग्रहण ही भारत में दिखाई देंगे। बाकी दो ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे परन्तु फिर भी आकाश मण्डल में ग्रहण काल अवश्य बनेगा और ग्रहण चाहे दिखाई दे या न दे परन्तु साधकों के लिये उसका भी उतना ही महत्व है।

अतः साधकों को चाहिए कि वे इस समय का पूरा पूरा उपयोग करें और कुछ विशेष साधनाओं के माध्यम से सफलता प्राप्त करें। इन ग्रहणों में साधना करने से सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है, इसके विपरीत यदि साधना सफल नहीं होती या कोई त्रुटि हो जाती है तो उसका विपरीत परिणाम नहीं भोगना पड़ता। अतः इस ग्रहण काल में साधकों को चाहिए कि वे अपनी इच्छानुसार साधना चुनकर उसे सिद्ध करें और सफलता प्राप्त करें।

मैं इन ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण दे रहा हूं :

१- खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण (१७-७-८१)

यह ग्रहण प्रातः ८ बजकर ५३ मिनट पर प्रारम्भ होकर दोपहर के ११ बजकर ४१ मिनट पर समाप्त होगा। यह चन्द्र ग्रहण है परन्तु भारत में इस समय दिन होगा इसलिये यह ग्रहण भारतवासियों को दिखाई नहीं देगा। परन्तु साधक ऊपर लिखे हुए समय में साधना सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

२- खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण (३१-७-८१)

यह ग्रहण प्रातः ६ बजकर ५१ मिनट से प्रातः ६ बजकर ०३ मिनट तक दिखाई देगा। दक्षिण भारत को छोड़कर भारत के उत्तरी भाग में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। धार्मिक-श्रद्धालु लोगों को चाहिए कि वे प्रातः ६ बजे से दोपहर डेढ़ बजे तक भोजन आदि न करें। स्नान आदि दोपहर डेढ़ बजे करने के बाद ही भोजन आदि करें और अपने नित्य कार्यों में संलग्न हों।

साधकों के लिये यह समय विशेष महत्वपूर्ण है और उनको चाहिए कि वे इस समय का पूरा-पूरा उपयोग करें।

३- खग्रास चन्द्र ग्रहण (१०-१-८२)

यह पूर्ण चन्द्र ग्रहण है और इसका प्रारम्भ ६ जनवरी ८२ की रात्रि को ११ बजकर ४५ मिनट पर होगा तथा यह (१०-१-८२ को) रात के ३ बजकर २६ मिनट तक रहेगा। श्रद्धालु व्यक्तियों को इस अवधि में भोजन आदि नहीं करना चाहिए। साधकों के लिये यह समय अत्यन्त श्रेष्ठ है।

४- खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण (२५-१-८२)

यह ग्रहण भारत में प्रातः ८ बजकर २४ मिनट से पहर के १२ बजकर ०६ मिनट तक रहेगा। परन्तु भारत में यह ग्रहण नजर नहीं आयेगा इसलिये जो ग्रहण दिखाई नहीं देता उसके लिये पूजा, दान आदि का कोई महात्म्य नहीं है। साधकों के लिये नहीं दिखाई देने वाले ग्रहण का भी उतना ही महत्व होता है जितना कि दिखाई देने वाले ग्रहण का होता है। इन ग्रहणों का साधक दो प्रकार से उपयोग कर सकते हैं

१- कुछ विशिष्ट वस्तुओं को प्राप्त कर सिद्ध करने के लिये।
२- तांत्रिक-मांत्रिक साधनाओं से संबंधित मन्त्रों को सिद्ध करने के लिये।

आगे की पंक्तियों में कुछ विशिष्ट वस्तुओं को सिद्ध करने व उसके प्रयोग के बारे में जानकारी दे रहा हूं।

१- सियारसिंगी :

यह एक दुर्लभ पदार्थ होता है और प्रकृति का मानव को एक आश्चर्यजनक वरदान ही है। सियार एक जानवर होता है जो कि पूरे भारत में जंगलों में पाया जाता है। परन्तु इस जानवर के सिर पर सींग नहीं होते।

प्रकृति का यह चमत्कार ही है कि कुछ सियारों के सिर पर कभी-कभी अचानक सींग उग आता है। सैंकड़ों सियारों में से किसी एक सियार के सिर पर ही सींग उगता है। यह सींग छोटा सा होता है पर उसका आकार सींग के समान ही होता है।

धनराशि व्यय करने पर भी इस प्रकार का दुर्लभ पदार्थ आसानी से प्राप्त नहीं होता परन्तु कुछ शिकारी या जंगल में रहने वाले व्यक्ति इस प्रकार के सींग प्राप्त कर लेते हैं, उन्हीं से सम्पर्क स्थापित करने पर इस प्रकार का सींग प्राप्त हो सकता है।

तांत्रिक कार्यों में तो इसका विशेष महत्व माना गया है और इसके माध्यम से कई दुर्लभ कार्य सिद्ध किये जाते हैं। यही नहीं, अपितु इसके द्वारा कुछ विशिष्ट क्रियाएं सम्पन्न की जाती हैं जिससे साधक मनोवांछित फल प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है।

इस प्रकार का सींग दुर्लभ और अप्राप्य होने के कारण ही मंहगा है और कितना भी व्यय करने के बाद यदि यह सींग प्राप्त हो जाता है तो इसे सौभाग्य ही समझना चाहिए। जिन लोगों को दुर्लभ वस्तुएं संग्रह करने का शौक होता है वे इस प्रकार का सींग बड़े यत्न से रखते हैं।

सामान्यतः जिसके घर में भी यह सींग होता है उसके घर पर तांत्रिक प्रयोग सफल नहीं हो पाता या यों कहा जाय कि उस व्यक्ति के परिवार के सदस्यों पर सामान्य रूप से तांत्रिक प्रयोग करने पर भी कोई हानि नहीं होती। अतः प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न यही होता है कि किसी न किसी प्रकार से इस प्रकार का सींग प्राप्त कर घर में रखा जाय।

परन्तु यह सावधानी बरतनी चाहिए कि ऐसा सींग असली हो, क्योंकि कुछ धूर्त स्वार्थवश नकली सियार-सिंगी भी बेचते हुए देखे गये हैं। इस ग्रहण काल में सियारसिंगी पर कुछ विशिष्ट प्रयोग सम्पन्न किये जाते हैं और इस प्रकार का प्रयोग कोई भी गृहस्थ या साधक सम्पन्न कर सकता है।

इसके लिये कोई विशेष जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती और यदि यह प्रयोग असफल

भी हो जाता है तो साधना करने वाले को कोई हानि नहीं होती।

प्रयोग १ : जब ग्रहण काल हो तब साधक को चाहिए कि वह स्नान करके तथा धोती पहनकर किसी भी प्रकार के आसन पर सियारसिंगी को अपने सामने रखकर बैठ जाये। मुंह किसी भी दिशा की ओर हो सकता है। सियार सिंगी के सामने गूगल या लोबान का धूप लगा दे, फिर उस सियारसिंगी को देखते हुए निम्न मन्त्र का जप करे।

मन्त्र

क्लीं हुं वशमानाय स्वाहा

इस मन्त्र की पांच मालाएं फेरनी चाहिए। माला किसी भी प्रकार की हो सकती है। जब पांच मालाएं पूरी हो जाय तब उस सियारसिंगी को उठाकर एक तरफ रख दे।

इस प्रकार वह सियारसिंगी सिद्ध हो जाती है और बाद में यदि साधक को किसी पुरुष या स्त्री को वश में करना हो या उसे अपने अनुकूल बनाना हो तो उस सियारसिंगी के सामने नीचे लिखे मन्त्र का केवल ग्यारह बार उच्चारण करे-

क्लीं हुं अमुकं-(यहां पर उस व्यक्ति या स्त्री का नाम बोलना चाहिए) वश मानाय स्वाहा।

इस प्रकार ग्यारह बार उच्चारण कर उस सियार-सिंगी को अपनी जेब में रखकर उस पुरुष या स्त्री के सामने जाते ही वह वश में हो जाता है और जिस प्रकार से आप आज्ञा देंगे उसी प्रकार से वह आज्ञा का पालन करेगा।

इस प्रकार आप किसी पुरुष या स्त्री को अथवा अपने अधिकारी, नौकर, दुकानदार, प्रतिस्पर्धी, शत्रु, प्रेमिका, पत्नी, पति, पुत्र या जिसको भी चाहे वश में कर सकते हैं।

इस प्रकार वह सियारसिंगी आगे कई वर्षों तक साधक के लिये सफलतादायक बनी रह सकती है।

प्रयोग २: ग्रहण काल में सियारसिंगी को लाल वस्त्र में लपेटकर अपने सामने रख दे और" सिद्धिदा यक्षिणी" को स्मरण करे। मन में यह भावना रखे कि सिद्धिदा यक्षिणी मेरे सामने आवे और जब भी मैं उसे कोई आज्ञा दूं तो वह मेरा कार्य पूरा करे। ऐसी भावना मन में रखकर नीचे लिखे मन्त्र की २१ मालाएं उस सियार सिंगी के सामने फेरे। माला कोई भी हो सकती है। एक माला में १०८ दाने होते हैं।

मन्त्र

ॐ ह्रूं धनदा यक्षिणी मम कार्य सिद्धि करे वशमानाय स्वाहा।

ऐसा करने के बाद साधक को चाहिए कि वह उस सियार सिंगी को अपनी सन्दूक में रख दे। इसके बाद प्रत्येक दिन इसी मन्त्र की २१ मालाएं फेरे तो सात दिन के भीतर-भीतर यह यक्षिणी सिद्ध हो जाती है और सिद्ध होने पर वह जीवन भर के लिये वश में रहती है।

बाद में उस यक्षिणी को जो भी आज्ञा दी जाती है, उस आज्ञा को वह यक्षिणी पूरा करती है। इस प्रकार से साधक, जीवन भर अनुकूल फल प्राप्त कर सकता है।

२- हत्था जोड़ी

हत्था जोड़ी भी प्रकृति का मानव को रहस्यमय वरदान है। यह जंगल में स्वतः प्राप्त होती है और इसका स्वरूप दोनों हाथ परस्पर जुड़े हुए के समान होता है। विरले भाग्य शाली लोगों के घर में ही इस प्रकार की आश्चर्यजनक वस्तु पाई जाती है।

शास्त्रों में हत्था जोड़ी को लक्ष्मी का रूप भी कहा गया है। अतः यदि कुछ भी नहीं किया जाय और असली हत्था जोड़ी घर में रहे तब भी व्यक्ति स्वतः ही आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बना रहता है।

प्रयोग : ग्रहण के दिन साधक को चाहिए कि वह ग्रहण काल में पश्चिम की तरफ मुंह करके बैठ जाये तथा अपने सामने हत्था जोड़ी को रख ले। निम्न मन्त्र की पांच मालाएं फेरे तो लक्ष्मी प्रसन्न होती है और उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ॐ ह्रीं स्थिर अष्टलक्ष्म्यै स्वाहा ॥

यदि कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

इस प्रकार जब माला समाप्त हो जाय तब साधक को चाहिए कि वह उस हत्था जोड़ी को अपने सन्दूक में या लॉकर में रख दे। अथवा जहां पर गहने आदि कीमती वस्तुएं रखी जाती हैं वहां रख दे तो उसके जीवन में आर्थिक अभाव नहीं रहता। व्यापार में उन्नति होती रहती है। यदि स्वयं बेरोजगार होता है तो वह नौकरी प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है तथा यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, वैभव सम्पत्ति आदि की दृष्टि से उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है।

इस प्रकार की हत्था जोड़ी कई वर्षों तक अनुकूल परिणाम देती रहती है।

कहा गया है कि यदि हत्था जोड़ी पर ग्रहण के समय प्रयोग नहीं भी किया जाय तब भी यदि हत्था जोड़ी घर में रहती है तो उस व्यक्ति के घर में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है और किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

यह भी सही तथ्य है कि यदि अपनी जेब में सियार-सिंगी हो तो चाहे वह ग्रहण काल में सिद्ध नहीं भी की हुई हो तब भी जेब में रहने पर उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सामने वाले व्यक्ति पर विशेष रूप से पड़ता है और वह स्वभावतः ही उसके अनुकूल बन जाता है।

३- गोमती-चक्र

यह भी एक दुर्लभ पदार्थ है और आसानी से प्राप्त नहीं होता। यह एक सफेद टुकड़ा होता है जिस पर एक चक्र सा बना होता है। यह चक्र स्वतः प्रकृति द्वारा निर्मित होता है।

ग्रहण काल में साधक को चाहिए कि ऐसा गोमती चक्र अपने सामने रख ले और उस पर निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरे-

मन्त्र

ॐ वं आरोग्यानिकरी रोगानशेषानम:

इस प्रकार जब ग्रहण काल में ग्यारह मालाएं सम्पन्न हो जायें तब साधक को वह गोमती चक्र सावधानी पूर्वक एक तरफ रख देना चाहिए। यह सिद्ध गोमती चक्र तीन वर्ष तक प्रभाव युक्त रहता है।

इसका प्रयोग बीमारी पर विशेष रूप से किया जाता है। कोई बीमार हो तो एक साफ गिलास में शुद्ध जल लेकर उसमें यह गोमती चक्र डाल दे और ऊपर लिखे मन्त्र को इक्कीस बार मन ही मन उच्चारण कर उस गोमती चक्र को बाहर निकाल दे तथा वह पानी रोगी को पिला दे तो वह रोगी आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ होने लगता है।

आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा प्रयोग किसी भी प्रकार के रोगी पर किया जा सकता है। तीन वर्ष के बाद इस प्रकार के गोमती चक्र को पुनः सिद्ध किया जा सकता है।

अब मैं ग्रहण काल में सिद्ध करने योग्य कुछ विशिष्ट मन्त्र व उनकी विधि स्पष्ट कर रहा हूं।

१-स्तंभन-प्रयोग

यदि मुकदमे में सफलता न मिल रही हो या शत्रु

हमारे ऊपर हावी हों या शत्रुओं की तरफ से परेशानी प्राप्त होती हो तो नीचे लिखे मन्त्र की ६० मालाएं ग्रहण के समय फेरने से शत्रु स्तम्भन हो जाता है और वह भविष्य में कभी भी तकलीफ नहीं देता। एक प्रकार से वह वश में हो जाता है। इस मन्त्र जप से मुकदमे में भी सफलता मिलती है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं वडवामुखि ह्रीं सर्वदुष्टानां ह्रीं वाचा मुख स्तम्भय ह्रीं बुद्धि नाशय ॐ स्वाहा।

इसके लिये किसी विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। केवल मात्र छः हजार जप करने से ही कार्य में सफलता मिल जाती है। ऊपर मन्त्र में जहां 'सर्वदुष्टानां' शब्द आया है वहां पर अपने शत्रु का नाम लेना चाहिए।

२- कार्य सिद्धि प्रयोग

यदि किसी कार्य में सफलता नहीं मिल रही हो और बराबर बाधाएं आ रही हों तो नीचे लिखे मन्त्र के पांच हजार मन्त्र जप ग्रहण काल में करने से उस कार्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ पं वायुपुत्राय एहि एहि आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय कार्य सिद्धिं करि स्वाहा।

इसमें किसी विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती। मन्त्र जप से पूर्व हनुमान का ध्यान कर जिस कार्य की पूर्ति के लिये मन्त्र जप किया जाय वह कार्य बताकर मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए। यह मन्त्र-जप ग्रहण काल में प्रारम्भ होना चाहिए और जब पांच हजार मंत्र जप पूर्ण हो जाये तब उठ जाना चाहिए। कुछ ही दिनों में साधक का वह कार्य निश्चय ही सम्पन्न हो जाता है।

३- किंकरी सिद्ध मन्त्र

किंकरी भूत-साधना है, और ग्रहण काल में यह साधना सिद्ध की जाती है। मन्त्र जप से किंकरी वश में हो जाती है और बाद में वह नित्य रात्रि को द्रव्य या स्वर्ण देती रहती है।

साधक को चाहिए कि वह ग्रहण-काल में मंत्र-जप प्रारम्भ करे। एक ही आसन पर बैठकर दक्षिण की तरफ मुंह कर दस हजार मन्त्र जप करे। ऐसा करने पर किंकरी स्वयं सामने आती है, और भविष्य में नित्य द्रव्य या स्वर्ण देने का वायदा करती है। इसमें इसी बात का ध्यान रखा जाता है कि साधक में मनोबल बहुत अधिक हो। दुर्बल या कमजोर साधकों को यह प्रयोग नहीं करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ नमो भगवति श्मशानवासिनि सर्वभूतसंसेविते एहि एहि श्मशानकिंकरि महामहिषभक्षिणि आगच्छ आगच्छ ह्रीं क्रों ह्रां ह्रीं स्वाहा।

साधना में सफलता तभी मिल सकती है जबकि साधक एकाग्र हो और उसकी मन्त्रों के प्रति पूर्ण आस्था हो साथ ही साथ वह पूर्णता के साथ कार्य करे तो अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

ग्रहण काल साधकों के लिये वरदान स्वरूप होता है और वे इसका उपयोग कर साधना में सफलता प्राप्त करते हैं। धैर्य, एकाग्रता, मन्त्रों के प्रति आस्था, साधना में पूर्णता आदि से निश्चय ही सफलता मिलती है।

☼

काल गणना

भारतीय महर्षियों ने काल गणना कर कुछ समय ऐसे निर्धारित किये हैं जो प्रत्येक कार्य के लिये उपयुक्त हैं। ये समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार हैं। इन समयों में यात्रा, शुभ-कार्य, मंत्र-जप, अनुष्ठान आदि का प्रारम्भ किया जा सकता है। इसके लिये मुहूर्त आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

इसमें महेन्द्र काल श्रेष्ठतम तथा अमृत काल श्रेष्ठ माना गया है। राहू काल सर्वथा त्याज्य है। शास्त्रों के अनुसार चाहे कितना ही श्रेष्ठ मुहूर्त हो परन्तु यदि उस समय राहू काल हो तो वह अत्यन्त ही अशुभ और दुर्भाग्यपूर्ण होता है।

नीचे जुलाई व अगस्त मास के महेन्द्र काल, अमृत काल तथा राहू काल स्पष्ट किये जा रहे हैं—

जुलाई तथा अगस्त १९८१

वार	काल	समय
रविवार	महेन्द्र	प्रात: ६-०० से प्रात: ६-४८ तक
	अमृत	प्रात: ६-४८ से प्रात: १०-०० तक
	राहू	सायं ४-३० से सायं ६-०० तक
सोमवार	अमृत	प्रात: ६-०० से प्रात: ७-३० तक
	राहू	प्रात: ७-३० से प्रात: ९-०० तक
	अमृत	प्रात: १०-४८ से दोपहर १-१२ तक
	अमृत	दोपहर ३-१२ से सायं ५-१२ तक
मंगलवार	अमृत	प्रात: ६-०० से प्रात: ८-२४ तक
	अमृत	प्रात: १०-०० से दोपहर १२-२४ तक
	राहू	दोपहर ३-०० से सायं ४-३० तक
बुधवार	अमृत	प्रात: ७-३६ से प्रात: ९-१२ तक
	राहू	दोपहर १२-०० से दोपहर १-३० तक
	महेन्द्र	दोपहर ३-३६ से सायं ४-२४ तक
	अमृत	सायं ४-२४ से सायं ६-०० तक
गुरुवार	अमृत	प्रात: ६-०० से प्रात: ८-२४ तक
	अमृत	प्रात: १०-४८ से दोपहर १-१२ तक
	राहू	दोपहर १-३० से दोपहर ३-०० तक
	अमृत	सायं ४-२४ से सायं ६-०० तक
शुक्रवार	अमृत	प्रात: ६-४८ [illegible] १०-०० तक

वार	काल	समय
शनिवार	राहु	प्रातः १०-३० से दोपहर १२-०० तक
	अमृत	सायं ४-२४ से सायं ५-१२ तक
	अमृत	प्रातः १०-३० से दोपहर १२-२४ तक
	राहु	प्रातः ९-०० से प्रातः १०-३० तक
	अमृत	दोपहर ३-३६ से सायं ५-१२ तक

यह समय गणना मिहिराचार्य ने स्पष्ट की है और उन्होंने तो यह भी लिखा है कि तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्रमा, व्यतिपात, दिशाशूल और पंचांग आदि गणना की आवश्यकता ही नहीं है, क्योंकि ऊपर जो समय बताये हैं, वे किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिये श्रेष्ठतम हैं, और यदि इन समयों में कार्य प्रारम्भ किया जाय तो निश्चय ही सफलता मिलती है। किसी व्यक्ति से मिलने जाना, व्यापार प्रारम्भ करना, लेन-देन करना, अनुबन्ध करना, मन्त्र जप या अनुष्ठान प्रारम्भ करना आदि सभी कार्यों के लिये ये समय श्रेष्ठतम सफलता दायक हैं।

ज्ञा ना मृ त

क लाभो गुणि संगमः किम सुखं प्राज्ञतरैः संगति
का हानिः समय च्युतिनिपुणता का धर्मतत्वे रतिः।
कः शूरो विजितेन्द्रियः प्रियतमा का-नुव्रता किं धनं
विद्या किं सुखमप्रवास गमनम् राज्यं किमाज्ञाफलम्

गुणी जनों की संगति ही सुख है। मूर्खों का साथ ही दुःख है। समय का दुरुपयोग हानि है। धर्म के प्रति अनुराग रखना निपुणता है। जो इन्द्रियों पर विजय पा ले वही शूर है। पतिव्रता स्त्री ही प्रियतमा है। विद्या धन है। देश छोड़कर न जाना सुख है। राज्य क्या है? आज्ञा का पालन होना।

यथा चतुर्भिःकनकं परीक्ष्यते निघर्षण छेदन ताप ताड़नैः
तथा चतुर्भिःपुरुषःपरीक्ष्यते त्यागेन,शीलेन गुणेन कर्मणा

सोने की परीक्षा चार उपायों से की जाती है-रगड़ना काटना, तपाना और पीटना। इसी प्रकार मनुष्य की परीक्षा चार बातों से होती है-त्याग,शील,गुण और कर्म।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

धैर्यवान पुरुष सही मार्ग से पैर नहीं हटाते, चाहे नीतिज्ञ उनकी निन्दा करें या प्रशंसा; चाहे लक्ष्मी (धन) आये, चाहे चली जाये; उनकी मृत्यु आज ही हो जाये या लम्बे समय बाद।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

न तो मैं राज्य चाहता हूं, और न स्वर्ग, और न मोक्ष। मैं तो दुःख से पीड़ित प्राणियों का दुःख दूर करना चाहता हूं।

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृति विभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोध से अविवेक पैदा होता है, अविवेक से स्मरण शक्ति चली जाती है और उससे बुद्धि नष्ट हो जाती है। बुद्धिनाश से सब कुछ नष्ट हो जाता है।

जुलाई-अगस्त के व्रत, पर्व तथा त्योहार

धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से व्रत, पर्व और त्योहार भारतीय जनता का आधार रहा है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में इन्हें मनाने के दिनों को लेकर काफी मतभेद देखे गये हैं। एक वर्ग किसी दिन एकादशी व्रत बताता है तो दूसरा वर्ग दूसरे दिन एकादशी व्रत को मान्यता देता है।

पत्रिका पाठकों की काफी समय से मांग थी कि प्रामाणिक रूप से व्रत, पर्व त्योहार आदि के बारे में पत्रिका में उल्लेख किया जाय।

पाठकों के विचारों को मान्यता देते हुए इस अंक से हम व्रत पर्व, त्योहार आदि का स्तम्भ दे रहे हैं और आगे प्रति माह यह स्तम्भ चालू रहेगा।

इससे भारतीयों में फैलने वाला मतभेद दूर होगा और वे प्रामाणिक रूप से व्रत, पर्व आदि मना सकेंगे।

एकादशी व्रत :

१२ जुलाई — आषाढ़ शुक्ला एकादशी व्रत
२७ जुलाई — श्रावण कृष्ण एकादशी व्रत
११ अगस्त — श्रावण शुक्ला एकादशी व्रत
२५ अगस्त — भाद्रपद कृष्ण एकादशी व्रत

प्रदोष व्रत :

१४ जुलाई — आषाढ़ शुक्ला प्रदोष व्रत
२८ जुलाई — श्रावण कृष्ण प्रदोष व्रत
१३ अगस्त — श्रावण शुक्ला प्रदोष व्रत
२७ अगस्त — भाद्रपद कृष्ण प्रदोष व्रत

सत्यनारायण व्रत :

१६ जुलाई — आषाढ़ सत्यनारायण व्रत
१५ अगस्त — श्रावण सत्यनारायण व्रत

श्री गणेशचतुर्थी व्रत :

२० जुलाई — श्रावण गणेश चतुर्थी व्रत
१८ अगस्त — भाद्रपद गणेशचतुर्थी व्रत

संक्रान्ति व्रत :

१६ जुलाई — श्रावण संक्रान्ति व्रत
१६ अगस्त — भाद्रपद संक्रान्ति व्रत

अमावस्या व्रत :

१ जुलाई — आषाढ़ अमावस्या व्रत
३१ जुलाई — श्रावण अमावस्या व्रत
२९ अगस्त — भाद्रपद अमावस्या व्रत

प्रमुख व्रत-त्योहार :

३ जुलाई	रथोत्सव
१२ जुलाई	हरि शयनोत्सव
१२ जुलाई	चातुर्मास व्रत प्रारम्भ
१७ जुलाई	गुरु पूर्णिमा
१७ जुलाई	व्यास पूजा
२१ जुलाई	सूर्य ग्रहण
२१ जुलाई	हरियाली अमावस्या
२ अगस्त	मधुश्रवा तृतीया
३ अगस्त	हरियाली तीज
३ अगस्त	वरद चतुर्थी
४ अगस्त	नाग पंचमी
५ अगस्त	कल्कि जयन्ती
८ अगस्त	श्री दुर्गाष्टमी
१५ अगस्त	रक्षा बन्धन
१८ अगस्त	बहुला चतुर्थी
२२ अगस्त	दूर्वाष्टमी
२३ अगस्त	कृष्ण जन्माष्टमी
२३ अगस्त	गोकुलाष्टमी
२६ अगस्त	पिठोरी अमावस्या
२६ अगस्त	कुशोत्पाटनी अमावस्या
२६ अगस्त	शनैश्चरी अमावस्या

जैन पर्व :

७ जुलाई	महावीर च्यवन
१७ जुलाई	तेरापंथ स्थापना
२६ अगस्त	जयाचार्य निर्वाण
२६ अगस्त	पर्युषण पर्व प्रारम्भ

पंचकप्रारम्भ समाप्ति काल:

१६जुलाई के सायं ४-१४ से २४ जुलाई के रात्रि १-५५ तक
१५अगस्त के रात्रि ११-३५ से२०अगस्त के प्रातः ७-२५ तक

☼

आरोग्य

सफेद बाल काले करने की विधि

सफेद बाल होने के कई कारण हैं, जिनमें आयु की वृद्धि, वंशानुगत प्रभाव, कोई विशेष गम्भीर बीमारी तथा टाइफाइड प्रमुख हैं।

आयु वृद्धि के साथ-साथ या कम उम्र में ही काले बाल सफेद हो जाते हैं। उसके लिये एक विधि किसी साधु ने बताई थी जो कि मैं नीचे स्पष्ट कर रहा हूं।

शुद्ध ताजे आंवले दो किलो लेकर उसे एक मिट्टी की हांडी में डाल दें, उसमें तीन किलो पानी डाल दें। हण्डिया लगभग इतनी बड़ी होनी चाहिए कि उसमें लगभग पांच किलो सामग्री आ सके।

इसके बाद उसमें निम्न वस्तुएं भी डाल दें। प्रत्येक वस्तु का भार २५० ग्राम हो। छुआरे, वंशलोचन, जरा पीपर, कपूरकाचरी, अधलाई तथा अखलाया की गिरी।

इस बात का ध्यान रखें कि प्रत्येक वस्तु शुद्ध हो और साफ की हुई हो। इन सबको आंवले के साथ मिला दें और फिर उस पर ढक्कन देकर एक तरफ रख दें। लगभग चौबीस घण्टे इसी प्रकार रहने दें। इस बात का ध्यान रखें कि उस पर सूर्य की रोशनी न पड़े। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह हण्डिया किसी अंधेरी कोठरी में रख दें।

दूसरे दिन उसी समय उस हण्डिया का ढक्कन अलग करके उसमें और पानी डाल दें तथा उसे मुंह तक भर दें। फिर उसे धीमी-धीमी आंच पर पकावें। लगभग तीन घण्टे तक पकाने के बाद हण्डिया नीचे उतार कर उसे ठण्डा होने दें। ठण्डा होने के बाद अन्दर की सामग्री घोटकर एक रस कर नित्य पांच तोला सेवन करें तो निश्चय ही सफेद बाल स्थाई रूप से काले हो जाते हैं।

☼

श्रावण मास में

नर्मदेश्वर शिवलिंग से संबंधित प्रयोग

नर्मदा नदी से प्राप्त शिवलिंगों को मंत्र-सिद्ध करके उनकी उपासना करने का बहुत महत्व है। इस उपासना के लिए श्रावण मास विशेष रूप से उपयुक्त होता है। इसी महीने इन शिवलिंगों पर कुछ विशेष प्रयोग भी सम्पन्न किए जाते हैं। सांसारिक जीवन की सांसारिक कामनाओं की पूर्ति के लिए नर्मदा नदी के नर्मदेश्वर-शिवलिंगों की उपासना से बढ़कर और कोई उपाय नहीं है।

प्रस्तुत है इस लेख में नर्मदेश्वर शिवलिंगोपासना से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी।

नर्मदा भारत की प्रसिद्ध और पवित्र नदी मानी जाती है। इसमें स्वतः शिवलिंग बनते हैं और ये शिवलिंग ही महत्वपूर्ण तथा पूजन आदि कार्यों के लिये सिद्धिदायक माने जाते हैं। इस सम्बन्ध में शिव-विशेषांक में बताया जा चुका है।

वस्तुतः इस प्रकार का स्वतः शिवलिंग यदि घर में स्थापित होता है तो यह उस गृहस्थ का सौभाग्य ही माना जाता है। श्रावण महीने में यदि कोई व्यक्ति एक बार भी इस प्रकार के मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त नर्मदेश्वर शिवलिंग पर दूध या जल चढ़ाता है तो उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

श्रावण महीने में एक ओर जहां नर्मदेश्वर शिवलिंग के पूजन का विधान है वहीं दूसरी ओर श्रावण महीने में ही इस प्रकार के शिवलिंग पर कुछ विशेष प्रयोग भी सम्पन्न होते हैं। परन्तु ये प्रयोग श्रावण महीने में ही सम्भव हैं और इस प्रकार के प्रयोग अपने घर में स्थापित नर्मदेश्वर शिवलिंग पर ही होते हैं।

पाठकों की जानकारी के लिये कुछ विशिष्ट प्रयोग दे रहा हूं। यदि साधक चाहे तो इस प्रकार के प्रयोग श्रावण महीने में सम्पन्न कर सकते हैं। इसमें अनुकूल स्थिति यह है कि यदि किसी त्रुटि की वजह से साधना सफल नहीं हो पाती तब भी विपरीत परिणाम नहीं होता और साधक को कुछ न कुछ लाभ ही होता है।

फिर भी अनुभव यह है कि यदि मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त नर्मदेश्वर शिवलिंग पर श्रावण महीने में निम्नलिखित प्रयोगों में से कोई भी प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो सफलता मिलती ही है।

१- सर्वव्याधिमोचन प्रयोग

श्रावण के प्रथम सोमवार को लकड़ी के एक तख्ते पर सफेद वस्त्र बिछा दे और उस पर चावलों से अष्ट दल बनाये। उसके मध्य में चावल की ढेरी बनाकर उस पर नर्मदेश्वर शिवलिंग स्थापित करे। इसके चारों तरफ चार कलश स्थापित करे। ये कलश मिट्टी के या तांबे के हों। इनमें पीपल के पत्ते डालकर उन पर नारियल रखे, प्रत्येक कलश में पांच पीपल के पत्ते इस प्रकार से डाले कि उनके डंठल कलश के अन्दर हों।

इसके बाद निम्न मन्त्र की ११ मालाएं फेरे तो निश्चय ही वह व्यक्ति समस्त प्रकार की परेशानियों से मुक्त होता है और यदि साधक रोगी होता है तो उसका रोग समाप्त हो जाता है।

प्रमुख व्रत-त्योहार :

२ जुलाई	रथोत्सव
१२ जुलाई	हरि शयनोत्सव
१२ जुलाई	चातुर्मास व्रत प्रारम्भ
१७ जुलाई	गुरु पूर्णिमा
१७ जुलाई	व्यास पूजा
२१ जुलाई	सूर्य ग्रहण
२१ जुलाई	हरियाली अमावस्या
२ अगस्त	मधुश्रवा तृतीया
३ अगस्त	हरियाली तीज
३ अगस्त	वरद चतुर्थी
४ अगस्त	नाग पंचमी
५ अगस्त	कल्कि जयन्ती
८ अगस्त	श्री दुर्गाष्टमी
१५ अगस्त	रक्षा बन्धन
१८ अगस्त	बहुला चतुर्थी
२२ अगस्त	दूर्वाष्टमी
२३ अगस्त	कृष्ण जन्माष्टमी
२३ अगस्त	गोकुलाष्टमी
२६ अगस्त	पिठोरी अमावस्या
२६ अगस्त	कुशोत्पाटनी अमावस्या
२६ अगस्त	शनैश्चरी अमावस्या

जैन पर्व :

७ जुलाई	महावीर च्यवन
१७ जुलाई	तेरापंथ स्थापना
२६ अगस्त	जयाचार्य निर्वाण
२६ अगस्त	पर्युषण पर्व प्रारम्भ

पंचकप्रारम्भ समाप्ति काल:

१०जुलाई के सायं ४-१४ से १४ जुलाई के रात्रि १-५५ तक
१५अगस्त के रात्रि ११-३५ से२०अगस्त के प्रातः ७-२५ तक

☼

आरोग्य

सफेद बाल काले करने की विधि

सफेद बाल होने के कई कारण हैं, जिनमें आयु की वृद्धि, वंशानुगत प्रभाव, कोई विशेष गम्भीर बीमारी तथा टाइफाइड प्रमुख हैं।

आयु वृद्धि के साथ-साथ या कम उम्र में ही काले बाल सफेद हो जाते हैं। उसके लिये एक विधि किसी साधु ने बताई थी जो कि मैं नीचे स्पष्ट कर रहा हूं।

शुद्ध ताजे आंवले दो किलो लेकर उसे एक मिट्टी की हांडी में डाल दें, उसमें तीन किलो पानी डाल दें। हण्डिया लगभग इतनी बड़ी होनी चाहिए कि उसमें लगभग पांच किलो सामग्री आ सके।

इसके बाद उसमें निम्न वस्तुएं भी डाल दें। प्रत्येक वस्तु का भार २५० ग्राम हो। छुआरे, वंशलोचन, खरा पीपर, कपूरकाचरी, अबलाई तथा अबलांगा की गिरी।

इस बात का ध्यान रखें कि प्रत्येक वस्तु शुद्ध हो और साफ की हुई हो। इन सबको आंवले के साथ मिला दें और फिर उस पर ढक्कन देकर एक तरफ रख दें। लगभग चौबीस घण्टे इसी प्रकार रहने दें। इस बात का ध्यान रखें कि उस पर सूर्य की रोशनी न पड़े। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह हण्डिया किसी अंधेरी कोठरी में रख दें।

दूसरे दिन उसी समय उस हण्डिया का ढक्कन अलग करके उसमें और पानी डाल दें तथा उसे मुंह तक भर दें। फिर उसे धीमी-धीमी आंच पर पकायें। लगभग तीन घण्टे तक पकाने के बाद हण्डिया नीचे उतार कर उसे ठण्डा होने दें। ठण्डा होने के बाद अन्दर की सामग्री घोटकर एक रस कर नित्य पांच तोला सेवन करें तो निश्चय ही सफेद बाल स्थाई रूप से काले हो जाते हैं।

☼

यदि साधक किसी दूसरे के लिये प्रयोग करना चाहे तो पूजा से पहले हाथ में जल लेकर कहे कि मैं अमुक व्यक्ति के लिये या अमुक व्यक्ति के रोग शान्ति के लिये यह मन्त्र जप कर रहा हूं। इस प्रकार करने से उस व्यक्ति का रोग समाप्त हो जाता है।

मन्त्र

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्द्धनं भर्गोदेवस्य धीमहि उर्वारुकमिव बंधनाद् धियो यो नः प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।

इसमें यदि छोटे मनकों की रुद्राक्ष की माला का प्रयोग किया जाय तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है। माला में १०८ मनके होने चाहिए।

२- पुत्र प्राप्ति प्रयोग :

जिस व्यक्ति के घर में पुत्र न हो या पुत्र उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं रही हो या सन्तान दीर्घायु नहीं होती हो तो उसके लिये यह प्रयोग महत्वपूर्ण है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने से पुत्र यदि कहना नहीं मानता हो तो कहना मानने लगता है, वह आज्ञाकारी होता है। इस प्रकार के प्रयोग से गृहस्थ जीवन अनुकूल एवं सुखदायक भी बन जाता है।

यह प्रयोग श्रावण के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ होता है और चारों सोमवारों को यह प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार यह प्रयोग मात्र चार बार ही पूरे महीने में किया जाता है।

साधक को चाहिए कि वह स्नान कर पूर्व की तरफ मुंह कर बैठ जावे। सामने लकड़ी के तख्ते पर चावल से पंचकोण बनाकर उसके मध्य में नर्मदेश्वर शिवलिंग स्थापित करे और एक भोजपत्र पर निम्नलिखित मन्त्र लिखकर वह भोजपत्र उस शिवलिंग के सामने रख दे, और फिर इसी मन्त्र की ११ मालाएं फेरे। इसके बाद नर्मदेश्वर शिवलिंग व भोज पत्र को पवित्र स्थान पर रख दे यही प्रयोग श्रावण महीने में प्रत्येक सोमवार को करे।

अन्तिम सोमवार को जब प्रयोग पूरा हो जाय तो उस भोज पत्र को चांदी या सोने के ताबीज में डालकर स्वयं धारण कर ले या पत्नी को पहना दे तो निश्चय ही उसकी मनोकामना पूर्ण होती है।

यदि कोई साधक किसी दूसरे के लिये प्रयोग करना चाहे तो संकल्प ले ले कि मैं यह प्रयोग अमुक व्यक्ति के लिये सम्पन्न कर रहा हूं।

मन्त्र

ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकशिपोर्वक्षः स्थल विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेत पिशाच-डाकिनी कुलनाशाय स्तम्भोद्भवाय समस्त दोषान् हर हर विष विष पच पच मथमथ हन हन फट हुं फट् ठःठः एहिरुद्रो ज्ञापयति स्वाहा।

यह अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है और यह ताबीज किसी भी अवस्था में अपवित्र नहीं होता।

३- मुक्ति प्राप्ति प्रयोग

यह प्रयोग कोई भी साधक कर सकता है, साधक को चाहिए कि श्रावण कृष्ण प्रतिपदा से यह प्रयोग प्रारम्भ करे और श्रावण की पूर्णिमा को इसका समापन करे।

साधक स्नान कर धोती पहिन कर पूर्व की तरफ मुंह कर आसन पर बैठ जाय और सामने चांदी या तांबे की तश्तरी में नर्मदेश्वर शिवलिंग को स्थापित करे और उसकी पूजा करे।

इसके बाद निम्न प्राणरक्षक कवच का पाठ करे। नित्य सौ पाठ साधक को करने चाहिए। इस प्रकार नित्य प्रयोग करता हुआ पूरे ३० दिन यह प्रयोग करे

तो निश्चय ही साधक मृत्यु के बाद कैलाश में निवास करता है और उसे अपने जीवन में अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता।

इस कवच को प्राण रक्षक कवच, मुक्ति प्राप्ति कवच शिव सायुज्य कवच, भी कहा जाता है। यह कवच गोपनीय होने के साथ साथ महत्वपूर्ण भी है। अतः इसका प्रयोग प्रत्येक साधक को अवश्य ही करना चाहिए।

विनियोग

भैरव उवाच- वक्ष्यामिदेवि कवचं मंगलं प्राणरक्षकम्। अहोरात्रं महादेवरक्षार्थं देवमण्डितम् अस्य श्री महादेवकवचस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिछन्दः सौः बीजं रुद्रो देवता सर्वार्थसाधने विनियोगः।

यह विनियोग है अतः इसे एक बार ही पढ़ना है अब नीचे कवच दिया जा रहा है जिसके सौ पाठ नित्य नर्मदेश्वर शिवलिंग के सामने होने चाहिए।

कवच

रुद्रो मामग्रतः पातु पृष्ठतः पातु शंकरः
कपर्दी दक्षिणे पातु वामपार्श्वे तथा हरः ॥१॥
शिवः शिरसि मां पातु ललाटे नीललोहितः
नेत्रे मे त्र्यम्बकः पातु बाहुयुग्मं महेश्वरः ॥२॥
हृदये च महादेव ईश्वरश्च तथोदरे॥
नाभौ कुक्षौ कटिस्थाने पादौ पातु महेश्वरः ॥३॥
सर्वं रक्षतु भूतेशः सर्वगात्राणि मे हरः ॥
पाशं शूलञ्च दिव्यास्त्रं खड्गं वज्रं तथैव च ॥४॥
नमस्करोमि भूतेश रक्ष मां जगदीश्वर॥
पापेभ्यो नरकेभ्यश्च त्राहि मां भक्तवत्सल ॥५॥
जन्ममृत्युजरा व्याधिकामक्रोधादपि प्रभो॥
लोभमोहान्महादेव रक्ष मां त्रिदशेश्वर ॥६॥
त्वं गतिस्त्वं मतिश्चैव त्वं भूमिस्त्वं परायणः॥
कायेन मनसा वाचा त्वयि भक्तिर्दृढास्तु मे ॥७॥

त्रियोड्डीश तन्त्र में इस पाठ के बारे में बताया गया है कि यह पाठ अत्यन्त गोपनीय होने के साथ साथ तुरन्त और पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

इत्येतद्रुद्रकवचं पाठनात्पाप नाशनम्।
महादेवप्रसादेन भैरवेन च कीर्तितम्॥
न तस्य पापं देहेषु न भयं तस्य विद्यते।
प्राप्नोति सुखमारोग्यं पुत्रमायुः प्रवर्द्धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात्।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी मोक्षमेव च
व्याधितो मुच्यते रोगाद्बंधो मुच्येत बन्धनात्।
ब्रह्महत्यादि पापं च पठनादेव नश्यति॥

४- कार्य सिद्धि प्रयोग :

साधक को चाहिए कि वह पश्चिम की तरफ मुंह करके बैठे और सामने नर्मदेश्वर शिवलिंग को स्थापित कर ले। इसके बाद उसके सामने निम्न मंत्र की २१ मालाएं फेरे। यह प्रयोग श्रावण महीने में प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ किया जाता है और ११ दिन का प्रयोग है।

प्रयोग करते समय घी का दीपक व अगरबत्ती जलती रहनी चाहिए, साधक को साधना काल में एक समय भोजन करना चाहिए और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

इस प्रकार नित्य २१ मालाएं जपे। माला और आसन किसी भी प्रकार के हो सकते हैं।

मन्त्र

ॐ नमो वीरायात्यन्तबलपराक्रमाय आगच्छ आगच्छ बलिं गृहाण गृहाण कार्यं साधय कार्यं साधय हुं फट्।

यह अनुभूत प्रयोग है इससे कुछ ही दिनों में साधक की मन इच्छा अवश्य ही पूर्ण होती है।

गुरू पूर्णिमा के अवसर पर विशेष लेख

गुरू पूर्णिमा

मानव जीवन पूर्णता तभी प्राप्त करता है जब वह गुरू से दीक्षा लेता है। गुरू का अर्थ कोई मनुष्य विशेष नहीं है, अपितु जो भी ज्ञान दे सके, व्यक्ति के जीवन को ऊंचा उठा सके और उस जीवन को पूर्णता दे सके वही गुरू कहलाने का अधिकारी है।

भारतवर्ष में जितना महत्व दीपावली, होली और रक्षा बन्धन का है, उतना ही महत्व गुरू पूर्णिमा का भी है। इस वर्ष यह गुरू पूर्णिमा १७ जुलाई को आ रही है।

प्रत्येक साधक या मानव को चाहिए कि वह गुरू पूर्णिमा के अवसर पर गुरू से मिले, उनसे आशीर्वाद प्राप्त करे और अपने जीवन को गुरू चरणों में समर्पित करता हुआ आने वाले वर्ष के लिये उन तथ्यों को ज्ञात करे जिनके माध्यम से वह अपने जीवन को अनुकूलता एवं पूर्णता दे सके।

वस्तुतः गुरू पूर्णिमा एक आनन्ददायक पर्व है, हर्ष और उल्लास का त्यौहार है, जीवन को पूर्णता देने का अवसर है। शिष्य के लिये ३६४ दिन होते हैं, जबकि यह एक दिन गुरू के लिये, गुरू के चरणों में समर्पित होने का दिन होता है।

शास्त्रों में वर्णित है कि साधक चाहे कहीं पर भी हो, कितना ही दूर हो, अपने कार्यों में चाहे कितना ही व्यस्त हो, उसे चाहिए कि वह यह आनन्ददायक दिन गुरू के चरणों में बैठकर उनसे ऊर्जा प्राप्त करे और उनके आशीर्वाद से अपने जीवन को धन्य और पवित्र करे।

स्कन्द पुराण में गुरू पर्व किस प्रकार से मनाया जाना चाहिए इसके बारे में विधान है।

प्रातः काल लगभग चार बजे साधक को उठ जाना चाहिए, और नित्य नैमित्तिक कार्यों से लगभग छः बजे तक निवृत्त हो जाना चाहिए। इसके बाद साधक को चाहिए कि वह गुरू चरणों के दर्शन करे और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करे।

इसके बाद साधक को चाहिए कि वह गुरू के घर को या गुरू के आश्रम की सफाई में पूरी तरह से जुट जाये। इस प्रकार का प्रयत्न करना चाहिए कि वह आश्रम अपने आप में स्वच्छ हो सके। यदि गुरू गृहस्थ हों तो उस घर को ही आश्रम समझ कर उसकी सफाई के कार्य में जुट जाना चाहिए।

लगभग दस बजे वहां पर जितने भी गुरू भाई एकत्र हुए हों उन सबको एक स्थान पर एकत्र होना चाहिए और परस्पर परिचय में नाम, निवास स्थान आदि के बारे में भी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। यदि संभव हो तो परस्पर साधना क्षेत्र में किस स्तर पर ऊंचे उठे हैं, इसके बारे में भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

लगभग ११ बजे गुरू को पवित्र आसन पर बिठाकर उनके सामने पूजन सामग्री रखनी चाहिए। साधक को चाहिए कि वह एक दिन पहले ही पूजन सामग्री की अवस्था कर ले पूजन सामग्री में निम्नलिखित वस्तुएं हों—

१. कुंकुम, २. रोली, ३. गुलाल, ४. अबीर, ५. केसर, ६. नारियल, ७. चावल, ८. दूध का प्रसाद, ९. फल, १०. लड्डू, ११. धोती, १२. कुर्ता, १३. पुष्प, १४. दीप, १५. अगरबत्ती, १६. यज्ञोपवीत, १७. और जो भावना हो।

इसके बाद साधक को चाहिए कि वह एक स्वच्छ पात्र में गुरू के चरणों को रख कर जल से उन्हें धोकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ ले, सारी पूजा गुरू चरणों की की जानी चाहिए। इस सम्बन्ध में गुरू से आज्ञा प्राप्त कर कुछ परिवर्तन भी किया जा सकता है।

गुरू पूजन से संबंधित सामग्री मई के अंक में दी गई है। उसी तरीके से भक्ति भाव से गुरू चरणों का पूजन करना चाहिए, और इसके बाद दण्ड के समान धरती पर लेट कर पूर्ण रूप से समर्पण भाव व्यक्त करना चाहिए।

इसके बाद मनोयोग पूर्वक सभी शिष्यों को मिलकर गुरू आरती करनी चाहिए और आरती के बाद उनकी आराधना, भजन, स्तोत्र, आदि करना चाहिए।

तत्पश्चात् शिष्यों को गुरू चरणों में पुष्प रखकर अपनी भावनाएं और इच्छाएं व्यक्त करनी चाहिए और बारी-बारी से प्रत्येक शिष्य को उनके चरणों में पुष्प और भेंट रखनी चाहिए।

इसके बाद प्रत्येक शिष्य बारी बारी से प्रश्न पूछ सकता है और मन में जो भी शंकाएं या विचार हों उन्हें रख सकता है। गुरू को चाहिए कि वह शिष्यों की शंकाओं का समाधान करे। इसके बाद गुरू इस विशेष अवसर पर आने के वर्ष की रूप रेखा बताते हुए शिष्यों को दिशा निर्देश दे।

शिष्यों को चाहिए कि उस दिन वे गुरू के यहां ही भोजन करें और इस प्रकार का भोजन स्वयं परस्पर मिलकर पकावें। इस भोजन में गुरू भी शामिल हों और प्रसन्नता के साथ भोजन करें।

दोपहर को कुछ विशेष साधनाएं या ज्ञान जो गुरू दे उसे सीखें या गुरू चाहें तो पीछे जो कुछ सीखा हुआ है उससे संबंधित शंकाओं का समाधान करें।

शिष्यों को चाहिए कि वह इस अवसर पर कुछ नवीन साधना अवश्य ही गुरू से प्राप्त करने का प्रयत्न करें। शाम को फिर गुरू की आज्ञा से मिलजुल कर भोजन पकावें और सभी एक साथ बैठकर भोजन करें।

भोजन के बाद शिष्यों को चाहिए कि वे परस्पर एक साथ बैठकर गुरू से संबंधित भजन आदि का कार्यक्रम रखें और इस प्रकार रात्रि के १०-११ बजे कार्य को पूर्णता दें।

यदि साधक गुरू के आश्रम या गुरू के घर नहीं जा सके तो उसे चाहिए कि वह अपने घर पर ही गुरू की मूर्ति या चित्र को सामने रखकर ऊपर लिखे तरीके से उनके चरणों की पूजा करे और इसी प्रकार भावना व्यक्त करे मानो गुरू स्वयं सामने बैठे हों। घर पर मिल जुलकर भोजन पकावे और पूरा परिवार प्रसन्नता के साथ प्रसाद ग्रहण करे।

रात्रि को अपने घर पर पड़ोस और मौहल्ले के लोगों को एकत्र कर गुरू, से संबधित भजन आदि का कार्यक्रम रखे। रात्रि को या दिन को वह गुरू चित्र को सामने रखकर उनसे आशीर्वाद और आज्ञा प्राप्त करता हुआ साधना कार्य को सम्पन्न करे।

वस्तुतः यह अवसर अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इस विशेष अवसर पर गुरू स्वयं एक विशेष ऊर्जा से सम्पन्न होते हैं। इसका मूल कारण यह है कि गुरू एक विशेष परम्परा से आबद्ध होता है, और उस परम्परा से वह एक विशेष उर्जा को अपने आप में संचित करता है और इस संचित उर्जा को अपने शिष्यों में वितरित करता है, यह वितरण कई बार अनुभव होता है और कई बार अनुभव नहीं भी होता है। परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि इस अवसर पर यदि मेरु दंड पर गुरू का हस्त होता है तो एक विशेष उर्जा प्राप्त होती है जिससे साधक शीघ्र ही साधना के क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

यह अवसर प्रत्येक साधक के लिये मंगलमय है, महत्वपूर्ण है। इस पर्व की तुलना अन्य किसी उत्सव या पर्व से की ही नहीं जा सकती, इसलिये लाख काम छोड़कर भी गुरू के चरणों में उपस्थित होने में अपने आपको सौभाग्यशाली समझना चाहिए। साथ ही साथ शास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि देवता, ब्राह्मण और गुरू के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिए, अतःअपनी भावना और श्रद्धा के साथ यथासंभव इस अवसर पर गुरू को कुछ न कुछ सामग्री अवश्य ही भेंट करनी चाहिए, यह शास्त्रों की मर्यादा के अनुकूल है।

इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ

परम हंस योगानन्द जी द्वारा लिखित "योगी कथामृत" एक श्रेष्ठ पुस्तक है जिसमें महावतार बाबा का वर्णन है जो लाहिड़ी महाशय के गुरु हैं। वे आज भी सशरीर हिमालय में विद्यमान हैं और उन्हें आसानी से देखा जा सकता है। पिछले दिनों कई साधकों और साधुओं को महावतार बाबा के दर्शन हुए हैं। इनका निवास स्थान बद्रीनारायण के निकट एक अज्ञात पर्वत शिखर पर है। यह स्थान सिद्धाश्रम के निकट है और और वहां पर कई उच्च योगियों के दर्शन अनायास ही हो जाते हैं।

वर्तमान जो बद्रीनारायण का मन्दिर है, वहां से दो किलोमीटर दूर आदि बद्रीनाथ का मन्दिर है। वहां से चढ़ाई प्रारम्भ होती है और घुमावदार तथा कठिन चढ़ाई के बाद सिद्धि पर्वत की चोटी पर पहुंचा जा सकता है, यह स्थान सिद्धाश्रम के नजदीक ही है।

जो साधक जिज्ञासु हैं या जिनमें दम-खम होता है वे इस स्थान की अवश्य यात्रा करते हैं। यह स्थान अधिकतर बर्फ से आच्छन्न रहता है।

पिछले दिनों नरहरि बाबा उधर अचानक चले गये थे। नरहरि बाबा पिछले चार वर्षों से मौन रखे हुए हैं और पूज्य श्रीमाली जी के निर्देशन में उन्होंने कई साधनाएं सम्पन्न की हैं। श्रीमालीजी के ही निर्देश से वे अधिकतर हिमालय पर विचरण करते हैं। उन्हें परामर्श दिया गया है कि वे अपने साथ कीमती कैमरा और संबंधित उपकरण रखें तथा जो भी अलौकिक दिव्य घटनाएं महापुरुष या स्थल दिखाई दें, उनका फोटो ले लें।

अप्रैल में नरहरि बाबा घूमते-घूमते सिद्ध शिखर पर पहुंच गये थे। अनायास उन्होंने देखा कि एक तेजस्वी युवक उस बर्फ पर बैठा हुआ है। पूरे शरीर पर एक लंगोटी के अलावा कुछ नहीं है, चेहरा एक दिव्य तेज से आलोकित है। पूरा शरीर गौरवर्ण, तेजस्वी और प्रभावपूर्ण है, शरीर पर कोई वस्त्र नहीं, लम्बी-लम्बी जटाएं-उनके साथ ही दो तीन शिष्य बैठे हुए थे जिनमें एक अमेरिकन सा लग रहा था।

नरहरि बाबा उन्हें देखकर एक विशेष आनन्द में भर उठे, एक क्षण के लिये अपनी आंखें बन्द कीं तो साधना से ज्ञात हुआ कि यही लाहिड़ी महाशय के गुरु तथा स्वामी योगानन्द द्वारा वर्णित परमहंस बाबा हैं, जिनके दर्शन करने के लिये पूरा विश्व लालायित है।

नरहरि बाबा ने नम्रता पूर्वक प्रणाम कर अपने कैमरे से महावतार का फोटो ले लिया। जहां तक जानकारी है,यह बाबाजी का पहला प्रामाणिक फोटो है।

नरहरि बाबा ने कहा-योगीराज मैं आपके चरणों में बैठकर कुछ सीखना चाहता हूं, आपका सान्निध्य प्राप्त करना चाहता हूं। वे मुस्कराये और बोले-यदि मेरा सान्निध्य चाहता है तो परीक्षा दे।

नरहरि बाबा बोले-मैं उपस्थित हूं। आप जो भी आज्ञा देंगे, वह शिरोधार्य होगी।

महावतार बाबा बोले-तुम इस पर्वत की चोटी से बिना हिचकिचाहट के कूद जाओ।

नीचे अतल गहराई थी और वहां से कूदने पर किसी भी प्रकार से बचना या जीवित रहना सर्वथा असम्भव था, पर नरहरि बाबा गुरु का स्मरण करके बिना हिचकिचाहट के नीचे कूद गये।

कुछ समय बाद महावतार बाबा ने शिष्यों से उनका शव लाने के लिए कहा। शिष्य उनके शव को उठा लाये। महावतार बाबा ने मृतक के सिर पर हाथ रखा। तत्क्षण मृतक नरहरि बाबा ने आंखें खोल दीं। शरीर जगह जगह से कट गया था। महावतार बाबा ने उसके शरीर पर हाथ फेरा तो पूरा शरीर स्वस्थ और तेजस्वी हो गया। महावतार बाबा ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, तुम जिसके भी शिष्य हो सही रूप में शिष्य हो। तुम्हें नये तरीके से शिष्यत्व स्वीकार करने की जरूरत नहीं है। जब भी मुझे स्मरण करोगे, मैं तुम्हारे पास आऊंगा और तुम्हें मेरा सान्निध्य प्राप्त रहेगा, आज से तुम्हें मृत्यु स्पर्श नहीं करेगी।

दूसरे ही क्षण महावतार बाबा अपने शिष्यों के साथ अदृश्य हो गये।

श्रावण पूर्णिमा के अवसर पर

अमरनाथ-दर्शन

भगवान शंकर देवों के भी देव कहे जाते हैं। इस कलियुग में ये शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं तथा छोटी सी साधना से भी साधक पर प्रसन्न होकर उसे मनोवांछित फल दे देते हैं।

भारत में अनेक शिव मन्दिर हैं जहां श्रद्धालु भक्त जाकर उनके दर्शन करते हैं और अपने आपको धन्य मानते हैं। शिव विशेषांक में (मन्त्र तन्त्र यन्त्र का मार्च अप्रेल अंक) द्वादश ज्योतिर्लिंग के बारे में विस्तार से विवरण दिया गया है परन्तु ऐसा कहा गया है कि जब तक साधक भगवान अमरनाथ के दर्शन नहीं कर लेता तब तक उसकी जीवन यात्रा अपूर्ण है। वह चाहे पूरे भारत के प्रत्येक शिव मन्दिर के दर्शन कर ले, परन्तु फिर भी उसकी यात्रा तब तक पूर्ण नहीं कही जा सकती जब तक कि वह अमरनाथ मन्दिर में स्थित प्रकृति निर्मित बर्फ शिवलिंग के दर्शन न कर ले। शिव संहिता में तो यहां तक कहा गया है कि केवल मात्र अमरनाथ के दर्शन करने से समस्त शिव मन्दिर एवं द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने का फल प्राप्त हो जाता है।

अनुभव में भी यही आया है कि अमरनाथ के दर्शन करने से एक अपूर्व शान्ति मिलती है, दीर्घायु और स्वास्थ्य लाभ होता है तथा उसका गृहस्थ जीवन ज्यादा मधुर, ज्यादा सुखकर, ज्यादा आनन्ददायक बन जाता है।

इस बार अमरनाथ के दर्शन १५ अगस्त को होंगे और नित्य की तरह इस बार भी हजारों-लाखों साधु सन्यासी, गृहस्थ, यति, हिमालय पर स्थित बर्फ से निर्मित अद्भुत शिवलिंग के दर्शन कर अपने आपको धन्य समझेंगे।

जब मनुष्य के प्रारब्ध उदय होते हैं और पुण्य की वृद्धि होती है तभी उसके मन में अमरनाथ यात्रा का विचार पैदा होता है। शास्त्रों के अनुसार जब मानव का शुभ समय आने वाला होता है तभी वह अमरनाथ की यात्रा पर रवाना होता है। जब उसके जीवन की श्रेष्ठता का समय प्रारम्भ होता है तभी वह भगवान अमरनाथ के दर्शन करने में सफल हो पाता है। इसलिये प्रयत्न करके भी, परिश्रम और कष्ट उठाकर के भी, आर्थिक परेशानी और अभाव अनुभव करते हुए भी व्यक्ति को चाहिए कि वह अमरनाथ की यात्रा करे और अपना जीवन धन्य करे। प्रयत्न तो यह करना चाहिए कि वह अपनी पत्नी और परिवार के साथ यात्रा करे परन्तु यदि यह सम्भव न हो तो उसे व्यक्तिगत रूप से तो अवश्य ही अमरनाथ के दर्शन करने चाहिए।

इस मन्दिर में भगवान अमरनाथ के दर्शन वर्ष में एक ही दिन होते हैं। इसके अलावा पूरे साल भर तक यह मन्दिर बर्फ से ढका रहता है, और मार्ग भी बर्फ से आच्छन्न रहने के कारण यात्रा सम्भव नहीं होती।

यह पूरे विश्व में एक मात्र ऐसा शिवलिंग है जो स्वतः बर्फ से निर्मित होता है। श्रावण पूर्णिमा को जब श्रद्धालु भक्त मन्दिर में आकर भगवान अमरनाथ के दर्शन करते है तो वह आश्चर्य चकित रह जाते है। प्रकृति द्वारा स्वतः ही स्वच्छ और धवल शिवलिंग का ऐसा अपूर्व निर्माण होता है कि आंखें तृप्त हो जाती है। यही नहीं, जगत-जननी पार्वती, नन्दी और गणेश की भी छोटी-छोटी प्रतिमाएं बर्फ के द्वारा ही निर्मित हो

जाती है।

वास्तव में ही यह उस पुण्य भूमि का प्रभाव ही है कि पूरे वर्ष तक यह मन्दिर सपाट सा रहता है परन्तु इस दिन एक विशेष प्रकार से शिवलिंग का निर्माण होता है, ऐसा लगता है जैसे किसी कुशल कारीगर ने प्रयत्न पूर्वक इस शिवलिंग का निर्माण किया हो।

इस वर्ष एक विशिष्ट समय है और ज्योतिष शास्त्र के अनुसार १५ अगस्त को शिव से संबंधित विशेष नक्षत्रों का परस्पर सम्बन्ध बन रहा है, अत: इस वर्ष इस शिवलिंग के दर्शन करने का विशेष महत्व है। यदि साधक इस वर्ष भगवान अमरनाथ के दर्शन करता है तो यह उसके जीवन का सौभाग्यदायक समय ही होगा।

अमरनाथ की यात्रा ज्यादा कठिन नहीं है, परन्तु फिर भी वृद्ध, बालक, और ऐसे व्यक्तियों को यात्रा नहीं करनी चाहिए जिन्हें दमा या श्वास की बीमारी हो, क्योंकि इस यात्रा में पहाड़ पर चढ़ना होता है और कुछ स्थानों पर ऑक्सीजन की न्यूनता पाई जाती है, फलस्वरूप वहां पर ऐसे लोगों को तकलीफ का सामना करना पड़ सकता है।

शास्त्रों में भगवान अमरनाथ के बारे में एक महत्वपूर्ण कथा पाई जाती है, जो इस प्रकार है—

एक बार भगवान शंकर और मां पार्वती कैलाश पर्वत से विचरण करते हुए अमर पर्वत पर आये (वर्तमान अमरनाथ का मन्दिर जिस पहाड़ पर है उस पहाड़ का नाम अमर पर्वत है और यहां से कैलाश पर्वत अत्यन्त निकट है। कहते हैं कि मत्स्येन्द्र नाथ यहीं से पैदल कैलाश पर्वत पर गये थे) मां पार्वती ने संजीवनी विद्या जानने की हठ की, परन्तु शंकर ने कहा कि यह विद्या अत्यन्त गोपनीय है और इसे प्रकट किया जाना सम्भव नहीं है, परन्तु पार्वती ने अत्यधिक हठ किया और वहीं एक शिला पर बैठ गई तथा कहा कि जब तक आप संजीवनी विद्या का रहस्य प्रकट नहीं करेंगे तब तक मैं इसी शिला पर बैठी रहूंगी। आखिर पार्वती के हठ के सामने भगवान शंकर को झुकना पड़ा।

पर वे सावधान थे कि इस गोपनीय विद्या का प्रकट करना उचित नहीं है अत: उन्होंने वहीं खड़े-खड़े डमरू बजाया जिससे कि सौ योजन तक जितने भी पशु-पक्षी, कीट, पतंग आदि थे वे दूर चले गये तथा सौ योजन तक मां पार्वती और भगवान शंकर के अलावा कोई प्राणी नहीं रहा।

परन्तु उस स्थान से कुछ ही दूरी पर एक कबूतरी ने अण्डा दिया था और वह उसे से रही थी। डमरू की ध्वनि सुनकर कबूतरी उड़ गई परन्तु अण्डा वहीं पड़ा रहा। संयोगवश डमरू की ध्वनि समाप्त होने के कुछ ही क्षणों के बाद वह अण्डा स्वत: ही फूट पड़ा और उसमें से नन्हा सा कबूतर निकल आया।

जब भगवान शंकर ने देखा कि इस डमरू की ध्वनि से कोई भी प्राणी निकट नहीं रहा है तो उन्होंने संजीवनी विद्या का रहस्य पार्वती को बताना शुरू किया। पार्वती 'हूं' की ध्वनि के साथ वह विद्या सुनती गई परन्तु कुछ समय बाद उन्हें झपकी लग गई। भगवान शंकर आंखें बन्द किये यह रहस्य बता रहे थे और 'हूं' की ध्वनि के साथ-साथ आगे के रहस्य स्पष्ट करते जा रहे थे। जब मां पार्वती सो गई तो उस कबूतर ने 'हूं' की ध्वनि करनी शुरू कर दी। भगवान शंकर ने इस ध्वनि को सुनकर यही समझा कि पार्वती सुन रही हैं अत: वे पूरे रहस्य को बताते चले गये।

जब संजीवनी विद्या का रहस्य पूरा हुआ और भगवान शंकर ने आंखें खोलीं तो देखा कि पार्वती सो रही हैं। उन्होंने उसे जगाया और कहा तू तो सो रही है, तू कब से सो रही है ? मैंने जो कुछ बताया है उसे कहां तक सुना है ?

पार्वती ने जहां तक सुना था वहां तक बता दिया

तो शंकर को अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि फिर इसके बाद 'हूं' की ध्वनि कौन करता रहा। उन्होंने आंखें ऊंची उठाकर देखा तो भय के मारे वह कबूतर अपने स्थान से उड़ पड़ा। शंकर को अत्यन्त क्रोध आया कि मेरे डमरू के नाद के बाद भी यह प्राणी यहां कैसे बचा रह गया, अतः उन्होंने क्रोध कर उसके पीछे अपना त्रिशूल फेंका और स्वयं भी उसे मारने के लिये झपटे।

कबूतर ने उड़ते-उड़ते कहा कि मैं संजीवनी विद्या सुन चुका हूं अतः न तो आपका त्रिशूल और न आप मुझे समाप्त कर सकते है, यह कहता हुआ वह उड़ता गया परन्तु भगवान शंकर ने भी उसका पीछा नहीं छोड़ा।

आगे एक स्थान पर महर्षि वेद व्यास [महाभारत के रचयिता] की पत्नी सूर्य को अर्घ्य दे रही थी। तभी उसे जंभाई आई और उसका मुंह खुला। यह देखकर वह कबूतर मुंह के रास्ते वेद व्यास की पत्नी के पेट में जा पहुंचा।

भगवान शंकर पीछा करते हुए वहां पहुंचे और वेद व्यास की पत्नी से कहा कि मेरा शत्रु तेरे पेट में है अतः उसे बाहर निकाल। वेद व्यास की पत्नी ने कहा कि मैं पतिव्रता हूं अतः आपकी लाल-पीली आंखों से घबराने वाली नहीं हूं। आपमें हिम्मत हो तो अपने शत्रु को प्राप्त कर लो। शंकर नारी जाति और विशेषकर पतिव्रता पर कुछ भी प्रयोग नहीं कर सकते थे अतः उसके दरवाजे पर ही धरना देकर बैठ गये।

वह पेट में चौदह साल तक बैठा रहा, उसने अन्दर से वेद व्यास की पत्नी को पूछा कि मां, यदि तुझे तकलीफ हो रही हो तो मैं बाहर आ जाऊं। मैं संजीवनी विद्या सुन चुका हूं अतः भगवान शंकर मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकते। वेद व्यास की पत्नी ने उत्तर दिया कि तू पेट में मानव बन चुका है अतः तेरा बाहर आ जाना ही उचित रहेगा।

उसी समय वह कबूतर बालक रूप में बाहर आ गया और मां ने उसे शुकदेव का नाम दिया। शुक रूप होने के कारण ही उसका नाम शुकदेव पड़ा। ज्योंही शंकर ने उसे देखा तो क्रोध कर अपने हाथ में त्रिशूल ले लिया। शुकदेव हँस कर बोले आप स्वयं जानते है कि मैं अब मृत्यु से परे हूं अतः आपका त्रिशूल मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, यह कहते-कहते शुकदेव ने नम्रता पूर्वक भगवान शंकर की परिक्रमा की और वन की ओर बढ गये।

भगवान शंकर उसकी नम्रता से अत्यन्त प्रसन्न हुए और पुनः उसी अमर पर्वत पर लौट आए जहां मां पार्वती बैठी हुई भगवान शंकर की प्रतीक्षा कर रही थी। भगवान शंकर ने उन्हें सारी बात बताई तो पार्वती ने शुकदेव को अपना पुत्र माना और भगवान शंकर से निवेदन किया कि आप अमर रूप में यहीं पर विराजमान हों, साथ ही साथ यहां पर आकर जो आपके दर्शन करे वह स्वयं ही अमर रूप तथा निश्चित रूप से रोग मुक्त बनें।

भगवान शंकर ने तथास्तु कहा। इस प्रकार यह क्षेत्र पुण्य क्षेत्र है, शिव क्षेत्र है, अमर क्षेत्र है। यहाँ पर जो भी व्यक्ति जाता है वह, धन, पद, मान, पद, प्रतिष्ठा या अपने कार्यों से जीवन में अत्यन्त ही अमरत्व हो जाता है।

अमरनाथ की यात्रा के लिये कोई विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं है। दिल्ली से जम्मू एक्सप्रेस जम्मू तक पहुंचाती है। दिल्ली के कश्मीरी गेट से जम्मू के लिए डी लक्स बस भी जाती है जो कि दस घन्टों में जम्मू पहुंचा देती है।

यात्रियों को चाहिये कि वे जम्मू में प्रसिद्ध वैष्णवी देवी के दर्शन करे जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान है, यदि यात्री चाहें तो ज्वाला देवी के दर्शन भी कर सकते हैं। जम्मू से ज्वाला देवी जाकर आने में ८-६ घंटे लग जाते हैं।

जम्मू से बस द्वारा श्री नगर पहुंचा जा सकता है।

मार्ग का प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोहर और रमणीय है। श्री नगर में गुलमर्ग, खिलनमर्ग, शंकराचार्य की पहाड़ी, निशातबाग, शालीमार बाग, आदि स्थान दर्शनीय हैं। यहां से पहलगांव तक बसें जाती हैं। पहलगांव अत्यन्त ही मनोहर स्थान है।

यहां से अमरनाथ के लिए यात्रा प्रारम्भ होती है। पहले छड़ी महाराज रवाना होते हैं। इस यात्रा में हजारों साधु-सन्त साथ होते हैं। राजकीय व्यवस्था की दृष्टि से किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं होती। मार्ग में खाने पीने, ठहरने, चिकित्सा-सुविधा, ऑक्सीजन, आदि की पूरी-पूरी व्यवस्था होती है। यात्रा के आगे-आगे छड़ी महाराज चलते हैं, इनके आगे कोई यात्री नहीं जा सकता।

यह यात्रा श्रावण पूर्णिमा के पांच दिन पहले पहलगांव से प्रारम्भ होती है। मार्ग में हजारों साधु और सन्त दिखाई देते हैं। ठीक श्रावण पूर्णिमा (इस वर्ष १५ अगस्त १६८१ को) को यह यात्री-दल अमरनाथ मन्दिर के पास पहुंच जाता है और इस दिन मन्दिर के कपाट खुलते हैं। यात्री और भक्त आश्चर्यचकित रूप से बर्फ से निर्मित प्राकृतिक शिवलिंग के दर्शन करते हैं और अपनी मनोवांछित इच्छा पूर्ण करते हैं।

मन्दिर का किवाड़ खुलने पर अन्दर एक सफेद कबूतर बैठा दिखाई देता है। आश्चर्य की बात यह है कि श्रावण पूर्णिमा के ६ महीने पूर्व ही किवाड़ बन्द हो जाता है क्योंकि इसके बाद हिमपात होने के कारण किसी भी यात्री का इधर आना संभव नहीं हो पाता। शिवलिंग के सामने एक घृत दीपक रख दिया जाता है जो कि बराबर जलता रहता है। आश्चर्य इस बात का है कि ६ महीने तक वह कबूतर उस मन्दिर में बन्द सा रहता है। इन ६ महीनों में वह बिना खाये-पीये कैसे जीवित रहता है यह भगवान अमरनाथ ही जानें।

इसके बाद यात्री अपनी सुविधा के अनुसार पहलगांव की तरफ लौटने लग जाते हैं और मात्र तीन दिनों में ही पहलगांव पहुंच जाते हैं। यात्रा में कुली, टट्टू, भार उठाने वाले, तथा वृद्ध लोगों के लिए डोली उठाने वाले कहार सुविधा से मिल जाते हैं, इसलिए यह यात्रा निरापद और सुखदायक बनी रहती है।

जो यात्री भगवान अमरनाथ के दर्शन करना चाहें उन्हें चाहिये कि वह ३ अगस्त के लगभग यात्रा प्रारम्भ कर दें जिससे कि मार्ग के धार्मिक स्थलों को देखते हुए ठीक समय पर छड़ी महाराज के यात्रा दल में शामिल हो सकें। एक साथ हजारों-लाखों लोगों की यात्रा कितनी आनन्ददायक और तृप्तिदायक होती है, इसका अनुभव वही कर सकता है जो इस प्रकार की यात्रा में भाग लेता है।

वास्तव में ही वे धन्य हैं जो जीवन में दुर्लभ और स्वर्ग तुल्य भगवान अमरनाथ के दर्शन कर जीवन को सार्थक करने में सफल हो पाते हैं।

यह अंक

हमारा प्रयास यही है, कि अंक ज्यादा से ज्यादा महत्वपूर्ण बने, सामयिक और विविध सामग्री का संयोजन हो, जिससे अंक दुर्लभ और चिरस्थायी हो सके। आपकी दो पंक्तियां हमारा उत्साह बढ़ाने में समर्थ होती है कृपया लिखिये यह अंक आपको कैसा लगा? आप और क्या चाहते है? कैसी सामग्री चाहते है?

¤

प्रतिक्रिया

मैंने तीन महीने पहले आपको पटना के तांत्रिक अघोर बाबा के बारे में विस्तार से लिख भेजा था। इनका इस क्षेत्र में काफी प्रभुत्व है। मैंने निवेदन किया था कि आप इनके बारे में पत्रिका में विवरण दें। अभी तक आपने इस लेख को क्यों नहीं प्रकाशित किया?

— अखिलेश कुमार, पटना

आपका लेख यथा समय प्राप्त हो गया था परन्तु पत्रिका की नीति यह है कि इसमें प्रामाणिक सामग्री ही प्रकाशित हो। अतः हमारा एक प्रतिनिधि पटना गया था और वहां पर उसने छानबीन की थी जिससे पता चला कि अघोर बाबा कोई तांत्रिक या सन्त नहीं है। इनके बारे में जो कुछ प्रचलित है, वह कल्पना पर ही आधारित है, अतः अघोर बाबा सामान्य साधु ही लगे।

यदि उनमें कोई विशेषता होती तो उनका विवरण प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता ही होती। भविष्य में भी आप जो सामग्री भेजें वह पूर्ण प्रामाणिक और तथ्यों पर आधारित हो। पत्रिका पाठकों को हम कपोल कल्पित तथा नकली सामग्री देने में विश्वास नहीं रखते।

— सम्पादक

आपका जून अंक अत्यन्त ही श्रेष्ठ है। इसमें आपने कनकधारा यन्त्र पर जो सामग्री दी है, वह प्रामाणिक है, साथ ही साथ, कनकधारा स्तोत्र देकर कई साधकों का हित कर दिया। धीरे-धीरे पत्रिका में निखार आ रहा है, और संस्कृत के पद शुद्धता से प्रकाशित हो रहे हैं।

— कुलभूषण, बदायूं

आपने कायाकल्प की विधि देकर श्रेष्ठ कार्य किया है। यह विधि अब तक गोपनीय रही है, और पहली बार इसे प्रकाशित कर यह प्रमाणित कर दिया है कि आप कुछ भी गोपनीय नहीं रखना चाहते। आप भारत की सामग्री भारत के युवकों को देने में विश्वास रखते हैं। पूज्य पण्डितजी के निर्देशन में सन् '७५ में इसी विधि से तीन युवकों का कायाकल्प करने में मैं भी प्रत्यक्षदर्शी था और उन तीन युवकों में एक मैं भी हूं. वास्तव में ही यह विधि आश्चर्यजनक है। आज मैं साठ वर्ष की आयु का होने पर भी कोई मुझे ३५ वर्ष से ज्यादा बड़ा नहीं समझता। यह पण्डितजी की कायाकल्प विधि का ही प्रभाव है।

—वैद्य हरीभूषण शर्मा, बम्बई

आपने जून अंक में आरोग्य स्तम्भ के अन्तर्गत जो जानकारी दी है, उसका प्रयोग कुछ वर्ष पहले मैंने किया था और इसका अद्भुत परिणाम प्राप्त हुआ था। वास्तव में ही पारद शिवलिंग कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

—विनोद मेहता, जयपुर

कृपया पत्रिका में संस्कृत से संबंधित सामग्री कम दें क्योंकि मेरी तरह अधिकांश पाठक सामान्य पढ़े-लिखे हैं, अतः अत्यधिक बोझिल सामग्री खटकती है।

— रघुनाथ सुरेका: कटिहार

नव ग्रह उपासना पर लेख वास्तव में ही जानकारी पूर्ण है। मेरे पिताजी के पास एक हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध है, उसमें भी विघ्न हर नव ग्रह यन्त्र के बारे में विस्तार से लिखा हुआ है। यह ग्रन्थ लगभग ८०० वर्ष पुराना है। आपने यह लेख देकर सामान्य लोगों के लिये सुखदायक एवं सहायक कार्य किया है।

— मगनभाई प्रभुभाई, अहमदाबाद

जिज्ञासा

प्रश्न- क्या मन्त्र या तन्त्र से सम्बन्धित साधनाओं ग्रहण काल का कोई विशेष महत्व होता है ?

—निर्मला : दिल्ली

उत्तर- ग्रहण काल अपने आप में श्रेष्ठ और अद्भुत समय होता है क्योंकि इस समय ग्रहों की स्थिति इस प्रकार से निर्मित होती है कि यदि उस समय कोई मन्त्र प्रयोग या तांत्रिक साधना प्रारम्भ की जाय तो सफलता की सम्भावना शत प्रतिशत हो जाती है। इसीलिये इस प्रकार के समय का तो इन्तजार रहता है और साधकों को चाहिए कि वे इस समय का पूरा-पूरा उपयोग करे।

प्रश्न- क्या गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु के पास रहना आवश्यक है ?

—श्याम बाजपेयी: पटना

उत्तर- आवश्यक या अनिवार्य तो कुछ भी नहीं है परन्तु इस दिन गुरु के साथ रहा जाय तो साधक के लिये या शिष्य के लिये विशेष अनुकूलता रहती है। क्योंकि इस दिन गुरु अपनी परम्परा से अपने आप में विशेष शक्ति एवं ऊर्जा संचित किये हुए होते हैं और वह विशेष ऊर्जा अपने शिष्यों में परिवर्तित करते हैं। फलस्वरूप शिष्य स्वयं ही आधी सफलता तो उस विशेष ऊर्जा से ही प्राप्त कर लेते है. इसके अलावा उस दिन शिष्य जो भी याचना गुरु से करता है, सामान्यतः गुरु का यह कर्तव्य होता है कि वह उसकी इच्छा को पूर्णता दे तथा प्राथमिकता दे। इस प्रकार गुरु पूर्णिमा के दिन हजार काम छोड़कर के भी गुरु के समीप रहने से लाभ ही लाभ है।

प्रश्न- आपकी बताई हुई विधि से मैंने कर्ण पिशाचिनी साधना सम्पन्न की और २१ वें दिन वह मेरे सामने आकर बैठ गई। उसने प्रश्न किये उसके उत्तर भी मैं सही-सही देता रहा परन्तु अचानक उसका रूप इतना भयंकर और डरावना हो गया कि वहीं आसन पर बैठे-बैठे ही मुझे लघु शंका हो गई, और दूसरे ही क्षण वह लोप हो गई। इसके बाद मैं अभी तक उस साधना को बराबर कर रहा हूं पर इसके बाद पुनः कोई दृश्य अनुभव नहीं हुआ है, मुझे क्या करना चाहिए ?

—स्वामी किरातार्जुन: हरिद्वार

उत्तर- तुम्हें यह बाधा भी पार लेनी चाहिए थी। डरावना दृश्य देखने के बाद भी तुम्हें स्थिर चित्त रहना था। ऐसा निर्देश तुम्हें दिया भी गया था और पहले से ही तुम्हें आगाह कर दिया गया था कि इक्कीसवें दिन भयंकर दृश्य दिखाई दे सकता है। यदि तुम उस समय विचलित नहीं होते या भय के मारे आसन पर ही लघु शंका नहीं हो गई होती तो वह कर्ण पिशाचिनी जीवन भर के लिये सिद्ध हो जाती, और तुम जिस प्रकार से चाहते उसी प्रकार से वह तुम्हारा कार्य सम्पन्न करती। वह सामने आई यह बात का प्रमाण है कि तुम्हारी साधना सही थी पर अब इस क्रम को तोड़ दो क्योंकि वह साधना खण्डित हो गई है। मुझसे मिलकर पुनः इस साधना को प्रारम्भ करो। यह सौम्य साधना है, खण्डित होने पर भी तुम्हारा अहित नहीं होगा। चिन्ता करने की बात नहीं है।

प्रश्न- मुझे मन्त्र तन्त्र आदि का ज्ञान नहीं है। मैं इस आने वाले श्रावण के महीने में क्या साधना करूं जिससे मैं ऋण से मुक्त हो सकूं। -हरीद्वार शर्मा:कलकत्ता

उत्तर- तुम्हें चाहिए कि श्रावण महीना आने से पूर्व ही अपने घर में नर्मदेश्वर शिवलिंग या पारद-शिवलिंग स्थापित कर लो और नित्य उस पर ॐ नमः शिवाय जपते हुए जल चढ़ाओ। निश्चय ही तुम कुछ समय के भीतर ही ऋण से मुक्त हो सकोगे।

पार्थिव शिव पूजा-विधान

श्रावण मास में शिवोपासना का विशेष महत्त्व है। इसीलिए श्रावण मास को शिवमास भी कहते हैं। शिवलिंग स्थापित करके इसकी पूजा करने का एक विशेष विधान है। विशेष विधि-विधान से की गई पूजा-उपासना से भगवद्-भक्ति का प्रसाद तो मिलता ही है, लौकिक कामनाओं की भी पूर्ति होती है।

प्रस्तुत है इस लेख में शिवोपासकों के लिए विशेष सामग्री।

१८ जुलाई से श्रावण मास प्रारम्भ हो रहा है। श्रावण का महिना पूर्ण रूप से शिव मास कहलाता है। इस महीने में शिव पूजा शिव ध्यान और शिव से संबंधित साधना की जाए तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

यों तो हमने मार्च-अप्रेल के अंक को शिव विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया था परन्तु शिव से संबंधित साधनाएँ इतनी अधिक है कि उनका कोई ओर-छोर ही नहीं है।

इन साधनाओं में पार्थिव शिव पूजन विधान भी है जिसे मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूं—

यह विधान आसाढ़ पूर्णिमा तक किया जाता है। इसमें नित्य ११०० शिवलिंग निर्मित किए जाते हैं और उनकी पूजा पूर्ण विधि-विधान के साथ की जाती है।

साधक को चाहिये कि वह तालाब या नदी के किनारे से शुद्ध मिट्टी ले कर आवे। यह मिट्टी चिकनी होती है और इसे पात्र में ला कर रख देनी चाहिये।

इसके बाद सौ तौले वजन का शिवलिंग-आकार बनाया जाता है। मिट्टी से ही गणेश, नन्दी, पार्वती, और कार्तिकेय की मूर्तियां बनाई जाती है। यदि इनकी मूर्तियां बनाने का अभ्यास न हो तो शिवलिंग को छोड़कर प्रत्येक के लिए तीस-तीस तोला मिट्टी लेकर उसे गोल वृत्त बना कर रख दे और इनमें से एक को गणेश, दूसरे को पार्वती, तीसरे को नन्दी और चौथे को कार्तिकेय मान कर उसे स्थापित करें।

इसके बाद साधक थोड़ी-थोड़ी मिट्टी लेकर लगभग ११०० छोटे शिवलिंग बनायें तथा प्रत्येक शिवलिंग पर चावल का पूरा दाना लगायें। गीली मिट्टी होने के कारण उस पर चावल का दाना भली प्रकार टिक जाता है।

फिर लकड़ी के एक तख्ते पर (जो कि चौकोर किसी भी नाप का हो सकता है) मध्य में शिवलिंग स्थापित करे। उनके बाईं ओर पार्वती तथा दाहिनी ओर गणेश स्थापित करे, पीछे कार्तिकेय और सामने नन्दी की स्थापना करे।

इनके चारों ओर समानान्तर पंक्तियों में ११०० शिवलिंग की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार पार्थिव शिव निर्माण होता है।

इसके बाद इन सब की पूजा होती है, जिसका विधान शिव विशेषांक में दिया हुआ है।

इसमें शिव का ध्यान निम्न प्रकार से है—

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसै राप्लावयन्तं शिरो
द्वाभ्यां तौ दधत मृगाक्ष वलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्
अंकेन्यस्तकरद्वया मृतघटं कैलासकान्तं शिवं
स्वच्छाम्भोज गतं नवेन्दु मुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।

इस प्रकार साधक ध्यान, आवाहन, स्नान, वस्त्र, धूप, दीप नैवेद्य आदि समर्पित करते हुए पूर्ण विधि-विधान के साथ शिव पूजन करे, तत्पश्चात् आरती करे। आरती के बाद मन्त्र पुष्पांजली करके शिव से अपनी मनोकामना प्रगट कर प्रार्थना करें, इसके बाद विसर्जन करे।

विसर्जन के बाद इस मिट्टी को नदी में या कुए में डाल देनी चाहिए और यदि यह संभव न हो तो किसी पवित्र स्थान पर इस मृत्तिका को रख देनी चाहिए।

इस प्रकार प्रत्येक दिन पूजन किया जाता है और इसकी पूर्णता श्रावण की पूर्णिमा को होती है।

श्रावण की पूर्णिमा को पूजा समाप्त कर अपने घर में भोजन बनावे और ब्राह्मण को या पांच कुमारी कन्याओं को भोजन करावे, इस प्रकार यह विधान पूर्ण होता है।

इस पूरे महीने में साधक को एक समय भोजन करना चाहिए। पूर्णतः ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए शिव के संबंध में ही बात-चीत करनी चाहिए।

इस प्रकार साधना करने से साधक की निश्चय ही मनोकामना पूर्ण होती है। क्रियोड्डीश तंत्र में लिखा है कि यदि व्यक्ति को शत्रु भय या राज्य भय होता है तो इस प्रकार की साधना से उसका यह भय पूरी तरह से समाप्त हो जाता है। मानसिक शान्ति के लिए यह विधान महत्वपूर्ण है। किसी भी स्त्री के बालक जीवित नहीं रहते हो तो उस स्त्री को चाहिये कि किसी ब्राह्मण द्वारा अपने घर में इस प्रकार का विधान सम्पन्न करवाये। इससे निश्चय ही पुत्र प्राप्ति संभव है और बालक दीर्घायु होता है।

वस्तुतः श्रावण मास में सम्पन्न किया जाने वाला यह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण विधान है। ☼

शेष पेज २८ का

इसकी महिमा अत्यधिक बताई गई है, और बताया गया है कि इस माला से उपरोक्त मन्त्र का जप नित्य एक बार कर ले या एक दिन में इस मन्त्र का १०८ बार उच्चारण कर ले तो उसके जीवन की प्रत्येक इच्छा एक महीने भर में ही पूरी हो जाती है। ऐसे व्यक्ति को सभी प्रकार की सिद्धियां अनायास ही प्राप्त होती रहती हैं और जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

इस प्रकार की माला पुरुष या स्त्री कोई भी धारण कर सकती है। वास्तव में ही यह अत्यन्त श्रेष्ठ और गोपनीय प्रयोग है।

☼

शेष पेज ३२ का

इसके बाद यह मूंगा जीवन भर उपयोगी बना रहता है। जब भी संभोग की इच्छा हो, उससे पहले यह मन्त्र पांच बार पढ़कर उस मूंगे को अपने मुंह में रख ले और एक मिनट बाद मूंगे को मुंह से हटाकर किसी अन्य स्थान पर या सन्दूक में रख दे। इसके बाद यदि सम्भोग किया जाय तो निश्चय ही वीर्य स्तम्भन होकर पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय मनोभिलाषित स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा।

ऊपर मैंने कुछ प्रयोग दिये हैं जो कि सिद्ध हैं और अपने आप में पूर्ण सफलतादायक हैं। साधक चाहे तो इनका प्रयोग करके सफलता प्राप्त कर सकते हैं, श्रद्धा और विश्वास से ही सफलता प्राप्त हो सकती है। ☼

ग्रहण काल में

रुद्राक्ष रक्षाकर माला प्रयोग

रुद्राक्ष की माला अपने आप में ही रक्षा करने वाली तथा रोग को दूर करने वाली मानी गई है। छोटे मनकों की रुद्राक्ष माला यदि हर समय कुरते के नीचे पहने रहें तो निश्चय ही अनुकूल रहता है, और इससे किसी भी प्रकार का रोग नहीं हो पाता।

ग्रहण काल में रुद्राक्ष की माला का एक गोपनीय प्रयोग प्राप्त हुआ है। छोटे मनकों की रुद्राक्ष की माला ले लें। उसमें १०८ या ५४ दाने होने चाहिए। इसके बाद उसे दूध से तथा जल से धोकर पवित्र कर लें।

ग्रहण काल में उस माला पर निम्न रक्षा कवच का पाठ १०८ बार करने से यह माला मन्त्र सिद्ध हो जाती है। यदि इसे साधक हर समय धारण किये रहे तो वह आने वाली विपत्तियों से रक्षा करती है, साथ ही साथ इससे आसन्न संकट का आभास भी हो जाता है।

इस बात का ध्यान होना चाहिए कि माला असली रुद्राक्ष की हो तथा वह चैतन्य हो, क्योंकि चैतन्य किया अपने आप में अत्यन्त कठिन है और सामान्य साधक इस प्रयोग को नहीं कर सकते। यह रक्षा-कर माला-प्रयोग चैतन्य रुद्राक्ष की माला पर ही संभव है। और इस प्रकार का प्रयोग ग्रहण काल में किया जाना चाहिए। यह माला जीवन भर साधक को सभी प्रकार से सहायक होती है, रोग मुक्ति में विशेष अनुकूलता प्रदान करती हैं तथा बाधा परेशानी, संकट और कठिनाईयों को दूर करने में विशेष सहायक है। वास्तव में ही इस प्रकार की माला को मृत्युंजय माला कहा जाता है।

प्रत्येक बुद्धिमान साधक को इस प्रकार की माला अवश्य ही धारण करनी चाहिए चाहे वह तान्त्रिक हो या मांत्रिक, चाहे वह गृहस्थ हो या सन्यासी, चाहे वह वैष्णव हो या शिव भक्त। यह माला प्रत्येक के लिये उपयोगी, लाभदायक, तथा सभी प्रकार से सहायक मानी गई है।

विनियोग

ॐ रुद्राक्ष माला मन्त्र कवचस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दो सदाशिवो देवता, साधका भीष्टसिद्धये विनियोगः प्रकीर्तितः।

मन्त्र

शिरो मे सर्वदा पातु प्रासादाख्यः सदाशिवः।
षडक्षरस्वरूपो मे वदनं च महेश्वरः।
पचाक्षरात्मा भगवान भुजो मे परिरक्षतु॥
मृत्युन्जयस्त्रिबीजात्मा आयु रक्षतु मे सदा।
वटमूलसमासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः॥
सदा मां सर्वतः पातु षट्त्रिंशद्वर्णरूपधृक्।
द्वाविंशार्णात्मिकोरुद्रः कुक्षो मे परिरक्षतु।
त्रिवर्णात्मा नीलकण्ठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा।
चिन्तामणिर्बीजरुपे सर्वनारीश्वरो हरः॥
सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः।
एकाक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वरः॥
मार्तण्डभैरवो नित्यं पादो मे परिरक्षतु।
ओमित्याख्यो महाबीजस्वरूपस्त्रि पुरान्तकः।
सदा मां रणभूमौ तु रक्षतु त्रिदशाधिपः।
ऊर्ध्वमूर्द्धानमीशानो मम रक्षतु सर्वदा॥
दक्षिणस्यां तत्पुरुषो अव्यान्मे गिरिनायकः।
अघोराख्यो महादेव पूर्वस्यां परिरक्षतु॥
वामदेवःपश्चिमस्यां सदा मे परिरक्षतु।
उत्तरस्यां सदा पातु सद्योजातः स्वरूपधृक्॥

शेष पृष्ठ २६ पर

जून से दिसम्बर ८१ के बीच यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिये महत्वपूर्ण काल

यदि ठीक मुहूर्त में किसी भी प्रकार का अनुष्ठान या मन्त्र तन्त्र साधना प्रारम्भ की जाय तो सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है। सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण इसके लिये महत्वपूर्ण समय माने ही गये हैं परन्तु अन्य कई मुहूर्त भी इस प्रकार के कार्यों के लिये श्रेष्ठ माने गये हैं।

मैं इस वर्ष के श्रेष्ठ मुहूर्त स्पष्ट कर रहा हूं। इस समय में यदि कोई साधना या अनुष्ठान प्रारम्भ किया जाय तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्ति समय
२१ जून	१०-५४ प्रातः से	सांय ६-५१ के बीच
२२ जुलाई	६-४५ रात्रि से	४-०२ प्रातः के बीच
२७ जुलाई	३-२० दोपहर से	रात्रि ११-२८ के बीच
२३ अगस्त	४-४४ दोपहर से	रात्रि ६-१३ के बीच
१६ सितम्बर	४-१६ दोपहर से	रात्रि ११-५८ के बीच
२३ सितम्बर	२-१० दोपहर से	सांय ५-२७ के बीच
११ अक्टूबर	४-३६ दोपहर से	रात्रि ११-११ के बीच
२३ अक्टूबर	११-१६ दोपहर से	दोपहर ३-२८ के बीच
६ नवम्बर	१२-४४ दोपहर से	रात्रि ८-११ के बीच
२२ नवम्बर	८-४२ प्रातः से	दोपहर १२-२४ के बीच
२१ दिसम्बर	६-५७ रात्रि से	रात्रि ११-२८ के बीच

ये समय भारतीय स्टेण्डर्ड समय के अनुसार हैं। इस अवधि में अनुष्ठान या मंत्र जप प्रारम्भ होना चाहिए। ☼

मेरे द्वारा सिद्ध किये हुए कुछ विशेष मंत्र एवं साधनाएं

मेरे जीवन में मंत्र और तंत्र का कोई महत्व नहीं था परन्तु कुछ समय बाद कुछ विशेष कारणों से मेरे जीवन को एक गहरा झटका लगा और मैं इन तंत्रों मंत्रों की ओर आकृष्ट हुआ। मैं अपने जीवन में एक सफल डाक्टर रहा हूं और इस दृष्टि से मैंने इन सारी विद्याओं को कपोल कल्पित तथा व्यर्थ ही समझा था। पूरे शहर में मेरा नाम था और दूर दूर से लोग मुझ से चिकित्सा और आपरेशन करवाने आते थे। परन्तु जब प्रयत्न करने पर भी मैं अपनी पत्नी को मृत्यु के मुख में जाने से नहीं बचा सका तो चिकित्सा पर से मेरा मन हट गया और यह पूरा जीवन तथा संसार व्यर्थ सा लगने लगा।

इन्हीं दिनों जब मैं चारों तरफ कटा हुआ था तो डा० श्रीमाली से मेरी भेंट हुई। पहली ही भेंट में उन्होंने पता नहीं मुझ में क्या देखा और आज्ञा दी कि तुम्हें मंत्र के क्षेत्र में प्रयत्न करना चाहिए जिससे कि तुम इसमें सफलता प्राप्त कर सको और इसके बाद ही तुम मालुम कर सकोगे कि तुम्हारी पत्नी की मृत्यु के लिये तुम जो कारण समझ रहे हो वे सही नहीं है परन्तु कुछ ऐसी घटनाएं हैं जिनको मैं बताना ज्यादा उचित नहीं समझता, यदि तुम इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करोगे तो एक न एक दिन इस रहस्य का भी पता लगा लोगे कि तुम्हारी पत्नी की मृत्यु कुछ और कारणों से हुई है।

मैंने शंका प्रकट की कि क्या मैं मंत्र तंत्र के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर भी सकूंगा? तो श्रीमाली जी ने उत्तर दिया कि मुझे तुममें विशेष योग्यता नजर आ रही है, और यदि तुम समग्र भाव से प्रयत्न करोगे तो अवश्य ही कुछ क्षेत्रों में तथा साधनाओं में सफलता प्राप्त कर सकोगे।

मेरा मन नौकरी से हट गया था और मैं स्तीफा देना चाहता था परन्तु श्रीमाली जी ने ऐसा करने से मना कर दिया और मुझे लम्बी छुट्टी लेने की सलाह दी। उनकी आज्ञानुसार मैंने नौकरी से लम्बी छुट्टी ले ली, और पूज्य गुरुदेव डा० श्रीमालीजी के चरणों में बैठकर इन विद्याओं को सीखने में जुट गया।

पिछले तीन वर्षों में मैंने कुछ साधनाएं सम्पन्न की हैं और उनमें पूर्ण सफलता मिली है। आज मैं यह कहने की स्थिति में हूं कि साधनाओं से संबंधित मंत्र अपने आप में पूर्णतः सफल हैं और यदि प्रयत्न पूर्वक अभ्यास किया जाये और गुरु के बताये हुए रास्ते पर आगे बढ़ा जाये तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

नीचे मैं केवल उन्हीं मंत्रों और साधनाओं को दे रहा हूं जिनको मैंने अपने जीवन में सिद्ध किया है और जिनमें सफलता प्राप्त की है।

१- श्री घंटाकर्ण : धन प्राप्ति मन्त्र

भारतीय तन्त्र साहित्य में घंटाकर्ण का स्थान विशेष है क्योंकि ये देवताओं के प्रधान सेनापति कार्तिकेय के तृतीय सहायक सेनापति थे, ये अन्य कोई ध्वनि सुनना पसन्द नहीं करते थे, इसके लिये उन्होंने अपने कानों के समीप घंटे लटका लिये थे जिसके फलस्वरूप उनके कानों में कोई भी अनिश्चित शब्द प्रविष्ट नहीं होता था, इसीलिये इनका नाम घंटाकर्ण पड़ा।

यह मन्त्र व्यापार वृद्धि और आर्थिक उन्नति के लिये श्रेष्ठतम है इससे संबंधित साधना का प्रारम्भ ग्रहण के दिन से, दीपावली से, धन तेरस से, नवरात्रि के प्रारम्भ से या किसी भी पूर्णिमा से किया जा सकता है।

साधक को सफेद धोती पहननी चाहिए और सफेद धोती ही अपने शरीर पर ओढ़नी चाहिए। आसन किसी भी प्रकार का हो सकता है। उत्तर की तरफ मुंह करके साधना करनी चाहिए। यह साधना मात्र ११ दिन की होती है और नित्य ४० माला जपनी चाहिए। कमल गट्टे की माला ज्यादा उपयुक्त है, अन्यथा अन्य किसी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र जपते समय शुद्ध घी का दीपक जलता रहना चाहिए। यह मन्त्र ऋण उतारने में अत्यधिक सहायक और प्रभावकारी है।

मन्त्र जपते समय सामने 'गोमती चक्र' रख देना चाहिए और इसके सामने ही मन्त्र जप करना चाहिए। जब ११ दिन पूरे हो जायं तो गोमती चक्र को अपनी तिजोरी या आलमारी में रख देना चाहिए। इससे जीवन में व्यापार वृद्धि और आर्थिक उन्नति अद्भुत ढंग से होती है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रौं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय पूरय सुख सौभाग्य कुरु कुरु स्वाहा।

२-भूत-प्रेत बाधा दूर करने का मन्त्र :

यदि किसी व्यक्ति को भूत लगा हो या घर में उपद्रव हो रहा हो, या कोई ऐसा अनुभव हो रहा हो जो कि अनुकूल नहीं हो तो इस मन्त्र की सिद्धि करनी चाहिए। इससे घर में यदि कोई भूत-प्रेत बाधा होती है तो दूर हो जाती है तथा यदि किसी व्यक्ति के शरीर में भूत-प्रेत का प्रकोप होता है तो वह भी निश्चित रूप से समाप्त हो जाता है।

इसको चक्रेश्वरी मन्त्र भी कहते हैं। इस मन्त्र की २१ दिन तक माला फेरनी चाहिए और नित्य ११ मालाएं फेरनी चाहिए। इसका प्रारम्भ किसी भी दिन से किया जा सकता है, यह सिद्ध मन्त्र है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं चक्रेश्वरी, चक्रवारुणी, चक्रधारिणी चक्रवेगेन मम उपद्रवं हन हन शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

३-वशीकरण मंत्रः

इसका प्रारम्भ ग्रहण के दिन से या किसी भी शनिवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। इसमें मूंगे की माला का प्रयोग करना चाहिए और नित्य ५१ मालाएं फेरनी चाहिए। इस प्रकार यह ७ दिन में ही सिद्ध हो जाता है।

लाल वस्त्र का आसन बिछाकर पश्चिम की तरफ मुंह करके बैठ जाय तथा सामने 'सियार सिंगी' को सिद्ध कर ले।

सिद्ध करने के बाद उस सियार सींगी को अपने पास में रखे और जिसको भी वश में करना हो उसके सामने खड़े होकर उस सियार सींगी पर हाथ फेरते हुए केवल मात्र ७ बार मन ही मन मन्त्र उच्चारण करे तो सामने वाला पूर्ण रूप से वश में हो कर अनुकूल कार्य करने लग जाता है।

किसी के सामने खड़े होकर मन्त्र जपते समय सियार सींगी को जेब में रखा जा सकता है।

मंत्र

ॐ ह्रां गं जूं सः (अमुक)में वश्य वश्य स्वाहा।

यहां पर मन्त्र सिद्ध करते समय अमुक शब्द का उच्चारण नहीं करना चाहिए मन्त्र सिद्ध होने पर जिसको वश में करना हो, उसका नाम अमुक के स्थान पर लेना चाहिए। जैसे ॐ ह्रां गं जूं सः देवदत्त में वश्य वश्य स्वाहा।

यदि व्यक्ति चाहे तो इलायची, लौंग, सुपारी, आदि में से कोई भी चीज उस सिद्ध सियार सींगी पर रख कर ७ बार मन्त्र जप कर यदि वह वस्तु संबंधित व्यक्ति को खिला दे तब भी वह वश में हो जाता है।

पानी में ७ बार मन्त्र जप करते हुए उस सियार सींगी को डुबोकर वह सियार सींगी वापिस निकाल ले और वह पानी संबंधित व्यक्ति को पिला दे तो वह वश में हो जाता है।

४-सर्व भय निवारण मन्त्र :

यह प्रयोग पंचमुखी रुद्राक्ष पर किया जाता है पर वह चैतन्य पंचमुखी रुद्राक्ष हो। जो पंचमुखी रुद्राक्ष बाजार में मिलते हैं वे सामान्य होते हैं। प्रयोग करने से पूर्व उन्हें चैतन्य कर लेना चाहिए, चैतन्य करने का मन्त्र और विधान अलग है।

सर्वभय निवारण मन्त्र की साधना किसी भी दिन से प्रारम्भ की जा सकती है। साधक को पूर्व की तरफ मुंह करके जप कार्य करना चाहिए। सामने मात्र चैतन्य पंचमुखी रुद्राक्ष रख दे और किसी भी प्रकार की अगरबत्ती लगा ले। बारह हजार मन्त्र जप करने से वह रुद्राक्ष सिद्ध हो जाता है और इस प्रकार यह मन्त्र साधना सिद्ध हो जाती है।

सिद्ध होने के बाद निम्न रूप से इसका प्रयोग किया जा सकता है-

१. उस सिद्ध रुद्राक्ष पर सात बार शत्रु का नाम लेकर हाथ फेरे और फिर वह हाथ अपने मुंह पर फेरे तो शत्रु वश में हो जाता है।

२. उस रुद्राक्ष पर किसी भी दिन इससे संबंधित मन्त्र की एक माला फेर कर कार्य शुरू करे तो निश्चय ही उसमें सफलता प्राप्त होती है।

३. मुकदमा या वादविवाद में इस मंत्र को २१ बार पढ़ कर उस रुद्राक्ष को अपनी जेब में डालकर जावें तो वह सफल होता है।

४. व्यापार के लिये यदि नित्य उस रुद्राक्ष पर ७ बार यह मन्त्र पढ़कर हाथ फेरे और फिर उस रुद्राक्ष को दुकान पर रख दे तो दिन में विशेष व्यापार तथा अधिक लाभ होता है। यह क्रम नित्य दुहराया जा सकता है।

५. रोग या व्याधि होने पर इस सिद्ध रुद्राक्ष को एक पानी की गिलास में डालकर ११ बार मन्त्र पढ़े और फिर वह रुद्राक्ष निकाल कर पानी रोगी को पिला दे तो वह आश्चर्यजनक रूप से स्वास्थ्य लाभ करने लग जाता है।

६. रविवार के दिन उस रुद्राक्ष पर १७ बार मन्त्र पढ़ कर अपनी जेब में रखकर बाहर जावे तो उसकी कीर्ति व इज्जत बढ़ती रहती है।

ऊपर जो प्रयोग बताये हैं रुद्राक्ष से ही सिद्ध किये जाते हैं। अतः चैतन्य रुद्राक्ष लेकर उसे उपरोक्त विधि से मन्त्र सिद्ध कर ले, इसके बाद वह रुद्राक्ष जीवन भर उपयोगी बना रहता है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं नमः स्वाहा।

५- वीर्य स्तम्भन मन्त्र :

यह मन्त्र ग्रहण के दिन सिद्ध किया जाता है और वह अपने आप में श्रेष्ठ मन्त्र है। जो व्यक्ति कमजोर हो धातु-क्षीणता के शिकार हों, जिनका वीर्य पतला और दुर्गन्ध युक्त हो या जो अपनी पत्नी को सन्तुष्ट नहीं कर पाते हों या जो शीघ्र स्खलन के शिकार हो या किसी भी प्रकार से संभोग करने में कमजोर हों, उनके लिये यह मन्त्र वरदान स्वरूप है।

इस मन्त्र का जप दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके करना चाहिए, और अपने सामने मूंगा रत्न रख देना चाहिए। यह मूंगा रत्न चैतन्य और प्राण युक्त होना आवश्यक है।

इसमें किसी भी प्रकार की माला और आसन का प्रयोग किया जा सकता है तथा ग्रहण के समय-केवल पांच मालाएं फेरने से ही वह मूंगा सिद्ध हो जाता है।

शेष पेज २७ देखें

अमोघ सदाशिव कवच

विश्व में कई ऐसे मंत्र, यंत्र स्तोत्र एवं कवच हैं जो गोपनीय तथा दुर्लभ हैं "अमोघ सदाशिव कवच" भी ऐसा ही दुर्लभ कवच है जो कलियुग में तुरन्त फलदायक है। वे साधक भाग्यशाली कहलाते हैं, जिनके पास ऐसा कवच है और वह तो निश्चय ही 'शिववत्' है जो नित्य इस कवच का पाठ करता है। प्रस्तुत है एक दुर्लभ गोपनीय कवच से संबंधित सामग्री—सदाशिव कवच..........

भगवान शंकर देवताओं में सर्वश्रेष्ठ मृत्यु और परेशानियों, बाधाओं तथा कष्टों का निवारण करने वाले हैं। अमोघ कवच अपने आप में गोपनीय रहा है, और इसके बारे में साधक लोगों में यह प्रचलित है कि गुरु अपनी मृत्यु के समय केवल मात्र अपने प्रिय उत्तराधिकारी शिष्य को ही यह शिवकवच बताते थे, क्योंकि यह कवच समस्त प्रकार की बाधाओं को पूर्णतः दूर करने में सहायक है।

सबसे बड़ी बात यह है कि यह कवच स्वयं ही मंत्र सिद्ध है और इस कवच को सिद्ध करने की जरूरत नहीं है। जिसके घर में एक बार इस कवच का पाठ हो जाता है, उसके घर में भूत-प्रेत बीमारी और मृत्यु भय आदि की सम्भावनाएं नहीं रहती।

कवच का तात्पर्य रक्षा है। इसे पढ़ने से या इसके जप से मनुष्य विपत्ति से छूट जाता है और वह समस्त संकटों से मुक्त होकर अभय प्राप्त कर लेता है।

यद्यपि संस्कृत साहित्य में सैकड़ों कवच प्रचलित हैं परन्तु अमोघ शिव कवच कठिन ही नहीं अपितु दुर्लभ भी है। मुझे यह कवच भगवान स्वरूप स्वामी बोधमय जी से प्राप्त हुआ था। उनके अनुसार यह पवित्र कवच सभी प्रकार के पापों को दूर करने वाला और सभी विपत्तियों से छुड़ाने वाला है। यह पूर्व जीवन के तथा इस जीवन के पापों से मुक्त करता है इसके प्रभाव से अकाल मृत्यु नहीं होती और घर में किसी प्रकार की बीमारी और कष्ट नहीं व्याप्त होता।

मैंने स्वयं इस कवच का कई जगह प्रयोग किया है, और मैंने देखा है कि इसका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है। व्यापार करने वाले तथा नौकरी करने वाले गृहस्थ एवं योगी सभी के लिये यह समान रूप से उपयोगी है। मेरे एक शिष्य प्रकाश भाई ने तो इस कवच के पन्ने छपवाकर साल भर तक वितरित किये थे, क्योंकि उनके एक मात्र पुत्र को कैंसर हो गया था और सभी डाक्टरों ने पूरी तरह से हाथ झटक दिये थे, तब मैंने उसे निरन्तर इस कवच का पाठ करने को कहा था। जब डाक्टरों ने कहा था कि यह बालक ज्यादा से ज्यादा २४ घंटे मुश्किल से निकाल सकता है, तब उन सज्जन ने बालक की खाट के पास बैठकर निरन्तर इस कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया था और दूसरे दिन से ही बालक स्वस्थ होने लगा था।

आज वही बालक धनबाद में व्यापार करता है। वह कैंसर जैसे भयानक रोग से मुक्त हो गया है, यह इस कवच की कृपा और प्रभाव नहीं तो और क्या है?

अमोघ शिव कवच के बारे में जानकारी-

यह सहस्राक्षर मंत्र है जो संसार भर के मंत्र साहित्य में अपनी तुलना नहीं रखता, परस्पर शब्दों का संयोजन इस प्रकार से है कि इससे एक विशेष प्रभाव बनता है जिससे यह तुरन्त ही अचूक लाभ देने में समर्थ हो पाता है।

साधक को या गृहस्थ को नित्य प्रातः इसका पाठ करना चाहिये यदि पूजा स्थान में शंकर का चित्र हो तो ज्यादा उचित है। शुद्ध स्थान में नियम पूर्वक आसन लगाकर साधक को पूर्ण श्रद्धा के साथ इस कवच का पाठ करना चाहिए। इसकी भाषा ऐसी ओजस्वी, गौरवशाली, भावपूर्ण, उत्कृष्ट एवं चमत्कारी है कि आप पढ़ते-पढ़ते तल्लीन हो जायेंगे, इसके प्रवाह में आप बहते चले जायेंगे, इसका असर जादू के समान होता है।

ऋषि- इस मंत्र के ऋषि योगीश्वर ऋषभ है।

छन्द- इसका छन्द अनुष्टुप है।

देवता- इस मंत्र के देवता स्वयं सदा शिव रुद्र है।

बीज- इस मंत्र का बीज 'ह्रां' है। बीज उसे कहते है जिससे स्तोत्र का उदय होता है।

शक्ति- इसकी शक्ति 'ह्रीं' है। शक्ति वह कही जाती है जो साधक को निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचाने के लिये साधक के अन्दर बल संचार करती है।

कीलक- इसका कीलक 'ह्रुं' है। कीलक वह है जो उस शक्ति को निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचने में सुदृढ़ रक्खे।

प्रयोजन- इस मंत्र का प्रयोजन सदाशिव को प्रसन्न करना है।

दिग्बन्ध- इसका दिग्बन्ध 'ॐ भूर्भुवः स्वः, है। दिग्बन्ध का तात्पर्य चारों दिशाओं को बांधना होता है, जिससे कि शरीर सुरक्षित रहे, और मंत्र जप में शरीर पर कोई विपरीत तांत्रिक प्रभाव न पड़े।

सहस्राक्षर अमोघ कवच

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्वात्मकाय सर्वमन्त्रस्वरूपाय सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्वतन्त्र स्वरूपाय सर्वतत्वविदूराय ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय पार्वती मनोहरप्रियाय सोमसूर्याग्नि-लोचनाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय महामणिमुकुटधा-रणाय माणिक्यभूषणाय सृष्टिस्थितिप्रलयकालरौद्रावताराय दक्षाध्वरध्वंसकाय महाकालभेदनाय मूलाधारैकनिलयाय तत्वातीताय गङ्गाधराय सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्तसाराय त्रिवर्ग-साधनायानेककोटिब्रह्माण्डनायकायानन्तवासुकि त क्षक-कर्कोटकशंखकुलिकपद्म महापदमेत्यष्टनाग-कुलभूषणाय प्रणवस्वरूपाय चिदाकाशायाका शादिस्वरूपाय ग्रहनक्षत्रमालिने सकलाय कलङ्कर हिताय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकसंहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकैकमंत्रे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवेदान्तपारगाय सकललो कैकवरप्रदाय सकललोकैकशंकराय शशांकशेखराय शाश्वतनिजवासाय निराभासाय निरामयाय निर्मलाय निर्लोभाय निर्मोहाय निर्मदाय निश्चि-न्ताय निरहंकाराय निराकुलाय निष्कलंकाय निर्गुणाय निष्कामाय निरुपप्लवाय निरवद्याय निरन्तराय निष्कारणाय निरातंकाय निष्प्रपंचाय निःसंगाय निर्द्वन्द्वाय निराधाराय निरोगाय निष्क्रोधाय निर्गमाय निष्पापाय निर्भयाय निर्वि-कल्पाय निर्भेदाय निष्क्रियाय निस्तुलाय निःसंशयाय निरंजनाय निरुपमविभवाय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्ण सच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्त स्वरूपाय तेजोरूपाय तेजोमयाय जय जय रुद्र महारौद्र भद्रावतार महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वांगखड्गचर्मपाशांकुशडमरुकर त्रिशूलचापबाण गदा शक्ति भिन्दपालतोमर मुसलमुद्गरप्रासपरि घभुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्यायुध भीषण कर सहस्रमुख दंष्ट्राकरालवदन विकटाट्टहासविस्फारित ब्रह्माण्ड मण्डल नागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विश्व रूप विरूपाक्ष विश्वेश्वर वृषभवाहन विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयं नाशय नाशय चोर भयमुत्सादयोत्सादय विष सर्प भयं शमय शमय चोरान्मारय मारय मम शत्रूनुच्चाट-

शेष पेज 40 पर देखें।

सन्ध्या विधि

शरीर की क्षमता बढ़ाने तथा मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य के लिए संध्या-वंदन एक उपयोगी प्रयोग है। इसे दैनिक कार्यों के समान ही महत्व दिया जाना चाहिए।

संध्या-वंदन न केवल एक धार्मिक कृत्य है वरन् अपने को समाजोपयोगी बनाने के लिए एक आवश्यक आधार भी है।

संध्या-वंदन धार्मिक क्रिया-कलापों का आवश्यक अंग है, कर्म मय जीवन की नींव है और सामाजिक कर्त्तव्य है।

प्रत्येक भारतीय के लिये सन्ध्या एक आवश्यक प्रयोग है जिसे करना उसका कर्तव्य एवं धर्म है। व्यावहारिक रूप से देखा जाय तो सन्ध्या करने से बहुत अधिक लाभ होता है। इससे मन और शरीर स्वस्थ होते हैं, बुद्धि तीव्र होती है। संध्या वन्दन के अन्तर्गत प्राणायाम करने की वजह से दिन भर प्रफुल्लता बनी रहती है।

भारतीय युवकों को मेरी सलाह है कि वे अपने प्रातः कालीन कार्यों में सन्ध्या वन्दन को अवश्य ही स्थान दें वे स्वयं अनुभव करेंगे कि ऐसा करने से वे पहले की अपेक्षा ज्यादा स्वस्थ हो सके हैं। संध्या करने से उनके चेहरे पर एक अपूर्व तेज बनता है तथा वे ज्यादा बुद्धिमान, ज्यादा योग्य तथा ज्यादा सफलता की ओर अग्रसर होने में सक्षम होते हैं।

मैं नीचे सन्ध्या विधि स्पष्ट कर रहा हूं :

प्रातः काल पूर्व की ओर मुंह करके साधक शुद्ध आसन पर बैठ अपने सामने जल का लोटा भर कर रख दे और उससे कुछ जल लेकर अपने शरीर पर छिड़के।

मन्त्र

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

फिर हाथ में जल लेकर यह संकल्प पढ़े। यदि सन्ध्या करने वाला ब्राह्मण हो तो 'शर्मा' क्षत्रिय हो तो 'वर्मा' तथा वैश्य हो तो 'गुप्त' अपने नाम के आगे लगाकर बोले।

ॐ तत्सदद्य अस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे-आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलि प्रथमचरणे अमुक संवत्सरे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्न,अमुक शर्माहं प्रातः सन्ध्योपासनं कर्म करिष्ये ॥

फिर हाथ में जल लेकर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़े।

पृथ्वी तिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ॥

फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर आसन पर जल छिड़कते हुए आसन को पवित्र करे।

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु आसनम् ॥

फिर साधक गायत्री मंत्र पढ़कर चोटी बांध ले और आंख बन्द करके नीचे लिखे मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करे।

पहले दाहिने नथुने को बन्द कर बायें नथुने से श्वास खींचे और फिर बायें नथुने को बन्द कर दाहिने नथुने से श्वास छोड़ दे, इसे पूरक कहते हैं।

श्वांस को नाभी में रोकने को कुम्भक कहते हैं तथा धीरे धीरे श्वास को बाहर निकालने को रेचक कहते हैं।

इस प्रकार नीचे लिखे मंत्र का तीनों ही प्राणायाम के समय एक एक बार जप करना चाहिए।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

फिर नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे।

सूर्यश्च मेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः॥

फिर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर आचमन करे।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृ-तेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्राऽया पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदव-लुम्पतु यत्किञ्चदुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

इसके बाद नीचे के मन्त्रों द्वारा अपनी उंगलियों से अपने शरीर पर जल छिड़कता हुआ मार्जन करे।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः ॐ ता न ऊर्जे दधातन ॐ महे रणाय चक्षसे ॐ यो वः शिवतमो रसः ॐ तस्य भाजयतेह नः ॐ उशतीरिवमातरः ॐ तस्मा अरंगमाम वः ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ॐ आ जनयथा च नः॥

फिर खड़ा होकर एक चरण की एड़ी उठाये हुए एक पांव पर खड़ा होकर गायत्री मन्त्र तीन बार करके पुष्प मिले हुए जल से सूर्य को तीन अंजलि दे।

फिर खड़े खड़े ही अपनी दोनों बाहें ऊपर उठाए निम्न मन्त्र पढ़े।

ॐ उद्वय तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम् ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष शूं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्॥ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतश्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

फिर खड़े खड़े ही अंगन्यास करे और शरीर के जिस अंग का नाम हो, उसे स्पर्श करे।

ॐ हृदयाय नमः ॐ भूः शिरसे स्वाहा ॐ भुवः शिखायै वषट् ॐ स्वः कवचाय हुम् ॐ भूर्भुवः नेत्राभ्यां वौषट् ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्॥

फिर हाथ में जल लेकर विनियोग करे—

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवः शुक्लो वर्णो जपे विनियोगः॥

फिर गायत्री देवी का ध्यान करे—

श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैर लंकारैश्च भूषिता॥
आदित्य मण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा।
अक्षसूत्रधरादेवी पद्मासनगता शुभा॥

शेष पेज

शिव के व्रतों का वर्णन व विधान

भारत की जनता धर्मप्रिय है, और भगवान शंकर भारतवासियों के लिये सर्वोच्च एवं सर्वप्रिय देवता रहे हैं।

प्रस्तुत लेख में भगवान शंकर से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण व्रतों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

१- सोमवार व्रत :

इस व्रत में साधक किसी भी सोमवार से व्रत प्रारम्भ कर सकता है। उसे कम से कम सोलह सोमवार का व्रत-संकल्प अवश्य लेना चाहिए।

प्रातः काल उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर साधक भगवान शंकर की विधि-विधान से पूजन करे और संकल्प लेकर प्रण करे कि मैं अमुक कार्य की सफलता के लिये आपका व्रत कर रहा हूं।

इसके बाद "नमःशिवाय" पंचाक्षरी मन्त्र की एक माला फेरे और उस दिन एक समय एक आसन पर बैठकर उतना ही भोजन करे जितना कि नित्य करता है, इसके अलावा दिन में किसी भी प्रकार का फलाहार या पेय ग्रहण न करे।

साधक को चाहिए कि व्रत के दिन असत्य न बोले, स्त्री-गमन न करे और यथा सम्भव शुद्ध सात्विक रूप से दिन व्यतीत करे।

२- मन्छा महादेव व्रत :

यह अत्यन्त महत्वपूर्ण व्रत है। किसी भी वर्ष से यह व्रत प्रारम्भ किया जा सकता है। श्रावण शुक्ल पक्ष प्रथम सोमवार से इस व्रत को प्रारम्भ किया जाता है तथा कार्तिक शुक्ला प्रथम सोमवार को इस व्रत का समापन होता है, इस प्रकार चार वर्ष तक इस को करने से पूर्णता मानी जाती है।

श्रावण शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार को साधक (पुरुष या स्त्री) स्नान कर शिव का पूजन करे और संकल्प में अपनी इच्छा व्यक्त करे, इसके बाद उस दिन मंछा महादेव कथा का पाठ करे या श्रवण करे। उस दिन साधक को एक बार ही भोजन करना चाहिए, इसके अलावा उस दिन किसी भी प्रकार का अन्न या भक्ष्य स्वीकार नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार प्रत्येक सोमवार को व्रत रखना चाहिए और मंछामहादेव की कथा सुननी चाहिए, यह कथा बाजार में सहज ही प्राप्य है।

कार्तिक शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार को सवा किलो आटा, सवा किलो घी, गुड़ आदि लेकर भगवान शिव के लिये प्रसाद बनाया जाता है और कथा के अनुसार उसके भाग कर वितरण किया जाता है। इस प्रकार एक वर्ष का विधान सम्पन्न होता है, कार्य की सफलता के लिये इस प्रकार चार वर्ष तक व्रत करना चाहिए, ऐसा करने पर निश्चय ही मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

३- शिवरात्रि व्रत :

यह व्रत पूरे वर्ष में सर्वश्रेष्ठ और शिव को अत्यन्त प्रिय व्रत है। इस दिन साधक दिन भर भूखा रहता है और सूर्यास्त के बाद प्रथम प्रहर में भगवान शिव की षोडशोपचार पूजा करता है। यदि संभव हो तो साधक

को रुद्राष्टाध्यायी का पाठ भी करना चाहिए। इसी प्रकार रात्रि के चार प्रहरों में चार बार शिव पूजा की जाती है तथा प्रातः काल भगवान शिव का शृंगार कर उसकी आरती की जाती है। साधक को रात्रि भर जागरण करना चाहिए, प्रातः काल आरती के बाद ही भोजन करने का विधान है।

रात्रि को शिव पूजन करते समय संस्कृत का ज्ञान न हो तो "नमः शिवाय" मन्त्र से भी पूजा की जा सकती है और सारी रात इसी पंचाक्षरी मन्त्र का जप किया जा सकता है।

४- षोडश सोमवार व्रत :

शास्त्रों में लिखा है कि शिवजी के प्रिय चन्द्र हैं जिन्हें वे हमेशा अपने ललाट में स्थापित किये रहते हैं। अतः शिव को प्रसन्न करने के लिये सोमवार का व्रत किया जाता है। शिव पूजन उत्तर की ओर मुंह करके किया जाना चाहिए।

साधक को किसी भी सोमवार को स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर भगवान शंकर की पूजा करके संकल्प के द्वारा अपनी इच्छा व्यक्त करनी चाहिए। उसके बाद "नमः शिवाय" मन्त्र की एक माला फेरी जाती है, साधक को उस दिन एक समय भोजन करना चाहिए और अन्य सभी नियमों का पालन करना चाहिए। इस प्रकार सोलह सोमवारों को व्रत किया जाता है। अन्तिम सोमवार को व्रत की समाप्ति पर पुनः शंकर की पूजा कर साधुओं को भोजन कराया जाता है, और सोमवार व्रत कथा सुनकर व्रत समाप्ति की जाती है।

५- श्रावण व्रत :

श्रावण का महीना शंकर को सर्वाधिक प्रिय है। इस महीने में चार या पांच सोमवार आते हैं। साधक को पहले सोमवार को प्रातःउठकर स्नान कर पूर्ण विधि-विधान के साथ भगवान शंकर की पूजा करनी चाहिए।

फिर शुद्ध स्थान से मिट्टी लाकर उसके लिंगाकार ११००० शिवलिंग बनाये जाते हैं और लिंग के ऊपर बिना टूटा हुआ चावल का दाना लगाया जाता है। साथ ही साथ मां पार्वती, नन्दी, गणेश और कार्तिकेय की मूर्तियां मिट्टी से ही बनाई जाती हैं।

फिर इन सब का पूर्ण विधि-विधान के साथ पूजन किया जाता है और पूजन के बाद तालाब में या नदी में उन शिवलिंगों का विसर्जन कर दिया जाता है।

श्रावण महीने में प्रत्येक दिन या प्रत्येक सोमवार इसी प्रकार पूजा करने का विधान है। इससे साधक की निश्चित रूप से इच्छा पूर्ण होती है और वह जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर पाता है।

६- श्रावण शिव व्रत :

श्रावण महीने में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तक यह व्रत किया जाता है। सर्व प्रथम साधक चांदी या पत्थर के शिव-लिंग स्थापित कर उसकी पूजा करता है तथा उस पर अनवरत जलधार देता है। शिवलिंग पर ऐसी व्यवस्था की जाती है कि पर तिपाई ऊपर रखे हुए कलश या घड़े के नीचे छोटा-सा छेद करके उसमें से जल की एक-एक बूंद शिवलिंग पर पड़ती रहती है। यह जलधार चौबीसों घंटे चलती रहती है तथा नित्य प्रातः काल साधक शिव की पूर्ण विधि-विधान के साथ पूजन करता है।

पूर्णिमा की रात्रि को यह व्रत समाप्त होता है। इस एक महीने में साधक को चाहिए कि वह नित्य एक समय भोजन करे, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे, सिगरेट आदि का सेवन न करे, दिन में न सोये, व्यर्थ की बकवास न करे, और अपने शरीर तथा मन को यथासम्भव शुद्ध और पवित्र बनाये रखे।

७- प्रदोष व्रत :

सामान्यतः प्रत्येक महीने की त्रयोदशी को प्रदोष

भगवान शंकर के दो प्रिय स्तोत्र

श्री शिवपंचाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥१॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दन चर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥२॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥३॥
वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चित शेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥४॥
यक्ष स्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥५॥
पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥

लिंगाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंग निर्मलभासितशोभित लिंगम् ।
जन्मजदुःख विनाशक लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥१॥
देवमुनिप्रवरार्चितलिंगं कामदहं करुणाकर लिंगम्
रावण दर्पविनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥२॥
सर्वसुगन्धिसुलेपित लिंगं बुद्धि विवर्धनकारण लिंगम् ।
सिद्धसुरा सुरवन्दित लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥४॥
कनकमहामणिभूषित लिंगं फणिपति वेष्टितशोभित लिंगम्
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥४॥
कुंकुमचन्दनलेपित लिंगं पंकजहारसुशोभित लिंगम्
संचिततापविनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥५॥
भूतगणार्चितसेवितलिंगं भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम्
दिनकरकोटिप्रभाकर लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥६॥
अष्टदलो परिवेष्टित लिंगं सर्वसमुद्भवकारण लिंगम् ।
अष्टदरिद्रविनाशित लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥७॥
सुरगुरु सुरवरपूजितलिंगं सुरवनपुष्पसदार्चित लिंगम् ।
परात्परं परमात्मकलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥८॥
लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

ॐ

शेष पेज ३४ का

योच्चाटय त्रिशूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खंगेन छिन्धि छिन्धि खट्वांगेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः सन्ताडय सन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषयाशेषभूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेताल मारीच ब्रह्मराक्षस गणान् संत्रासय संत्रासय मामभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामा श्वासयाश्वासय नरकभयान्मा मुद्धरोद्धर सञ्जीवय सञ्जीवय क्षुत् त्र्यां मामाप्यायप्याप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय मृत्युञ्जय त्र्यंबक सदाशिव नमस्ते नमस्ते ।

वस्तुतः इस कवच की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है । किसी भी प्रकार का संकट हो या मानसिक परेशानी हो, आप स्वयं केवल एक बार इसका पाठ करके देखिये । आप अनुभव करने लगेंगे कि वास्तव में ही यह कवच सर्वश्रेष्ठ, और शिव के कवचों में अजेय है ।

☼

शेष पृष्ठ ३८ का

व्रत किया जाता है । पर कभी-कभी एक दिन पहले या एक दिन बाद भी यह व्रत आ जाता है अतः योग्य ब्राह्मण से इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए ।

प्रदोष के दिन साधक को प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर भगवान शंकर की पूर्ण विधि-विधान के साथ पूजा करनी चाहिए और प्रदोष कथा सुनकर ही एक समय भोजन करना चाहिए । इस प्रकार प्रत्येक महीने में दो प्रदोष व्रत किये जाते हैं । एक साल भर तक इस प्रकार व्रत करने से साधक की मनोकामना निश्चय ही पूर्ण होती है ।

वस्तुतः ये व्रत शिव भक्तों के लिये आवश्यक हैं और उन्हें अपनी सामर्थ्य के अनुसार इस प्रकार के व्रतों को करना चाहिए । ऐसा करने से वे इस जीवन में पूर्ण सुख प्राप्त करते हुये अन्त में मोक्ष पद प्राप्त करते हैं ।

☼

शेष पेज ३६ का

फिर हाथ में जल लेकर नीचे लिखा विनियोग पढ़े ।

तेजोऽसीति देवा ऋषयो गायत्री छन्दः शुक्रं दैवतं गायत्र्यावाहने विनियोगः ॥

फिर गायत्री देवी का निम्न मन्त्र से आह्वान करे—

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ॥

फिर नीचे लिखे गायत्री मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करे—

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए प्रदक्षिणा करे—

**यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणापदे पदे ॥**

इस प्रकार गायत्री का जप करने से शरीर की ऊर्जा बढ़ती है, और चेहरे पर एक विशेष प्रकार की चमक पैदा होती है जिसे ब्रह्म चमक कहते हैं ।

वास्तव में ही प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह गायत्री एवं सन्ध्या वन्दन करे, इसे किसी भी दिन से प्रारम्भ किया जा सकता है ।

☼

जिसके बिना प्रत्येक गृहस्थ का घर अधूरा है

संसार में प्रत्येक पदार्थ है, पर भाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ही ऐसे दुर्लभ, अप्राप्य, सिद्ध विग्रह एवं यंत्र स्थापित हो सकते हैं।

❀ नर्मदेश्वर शिवलिंग

शास्त्रों में कहा है—

प्रजावान्, भूमिवान् विद्वान् पुत्र बांधववांस्तथा।
ज्ञानवान्मुक्तिमान साधुः शिवलिंगार्चनाद् भवेत् ॥

अर्थात् जिसके घर में नर्मदेश्वर शिवलिंग नहीं है, वह घर श्मशान तुल्य है, जो एक बार भी घर में शिवलिंग स्थापित कर उसकी पूजा कर लेता है, उसे जीवन में प्रजा, भूमि, भवन, विद्या, पुत्र, श्रेष्ठता ज्ञान आदि सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

शुद्ध, प्रामाणिक, मंत्र संस्कार युक्त, रुद्रयामल पूर्ण मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य नर्मदेश्वर शिवलिंग

न्यौछावर १३२) रु.

❀ पारद शिवलिंग

शुद्ध निर्दोष पारे को मूर्च्छित, ताड़ित, शोधित क्रियाओं से निर्मल कर विजय काल में निर्मित "पारद-शिवलिंग"।

यह देव-दुर्लभ शिवलिंग मुद्राबन्ध, अर्चन, प्राण प्रतिष्ठा, मंत्र सिद्ध, रस सिद्ध, एवं संजीवनी मुद्रा से सिद्ध अद्‌भुत, आश्चर्य जनक, सुन्दर, सुरम्य, श्रेष्ठतम फलदायक

न्यौछावर रु. १५००)

❀ कुबेर मंत्र

यह दरिद्रता मिटाने, व्यापार में उन्नति देने तथा जीवन में समस्त प्रकार के भौतिक सुख सुविधाएं देने में आश्चर्यजनक रूप से सहायक..

अष्टलक्ष्मी सम्पुट युक्त, रावण सूक्त सिद्ध मंत्र युक्त, प्राण प्रतिष्ठा अनुप्रेरित, विशेष धनदायक मंत्रों से सिद्ध..

न्यौछावर २४०)

❀